श्रीक्षा अविका

कृषाः - अधिम वाधिक छ।, डाक माञ्च ११०, वांगांत्रिक ४५. डाकमाञ्च ५०, देवपात्रिक ०, डाक माञ्च । ८० जाना। जनियम वार्षिक १०१०, डाक माञ्च ११० होका। প্রতি খণ্ড। । বিজ্ঞাপন প্রকাশের মূলাঃ –প্রতি প ক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চতুর্প ও ততোধিকবার ১০ আনা। ইংরেজী প্রতি পংক্তি। আনা।

विष जारा

कलिकांडाः— २° ध काल् खन, — श्रम्भिडिवांब्र, मन ১২৮२ माल हेः > मा गार्क

३५१७ मान।

० मश्या

वि उढ रेशन। ---:010:---

३५ नः वागायक्त बोयुक वातू मनो ज्वन न्मिति छ। ।

सथ जािजगांत ७ डेलां डेर्रा वााि धित्र विरम्भ धिम, धम, क्रां डेशकांत्री धवर इंहा घात्रा जदनक जदतांता लां क कित्रशां हि। यूना ॥%०

२। धौग्राकानीन शानौग्र एत्रा । शत्रि-खांख वाक्तिश्व धक ठायट थांन क्रिल भारीत श्विक, इजिनेतक, जार्र त्रिन-कांत्रक ७ (शर्षेत्र छेश प्रव नाम कित्रिय। गुला ॥०/०

७। इड्९ हिम मांगद्र टेउन। धाई एंश्क्रके टेन्स भाख बावहाद बाग्न, शि दिश्रा मकल विद्यास छेशकांत्र लां ७ कित्र । यथा । चार्या (याता, विनग, नितः गोज, भाज ज्याना, भाषीत जारमञ्जा, श्राक्ता, हत्क (घांत्र , मर्भान, मिखएकत की ने जा छे बता थान, वांत्र, छेकान्नि इंड्यापि। यूना ५

. 8। वाजताङ देजन। इंश्टि विविध वांड यथा कामणाटन, विद्रल, कनकटन, ेर्डिन भी व्यवमा, वा छिटन धर्मा यह मिटनर इडेक ना (कन निन्ध्य व्याद्यां इड्दा । युमार ५०

व। ठर्चा आर्थार्थि देजना। शर्बन, माम, ठूलकिल, ब्रक्क कुर्छ, शांउड़ा, होक, शांबा बाबा वा भागिवविक्र इहेश वत्क्र छे व क्का-कार्त्र मन्। ५०

छ। कर्न भी जा देजा। इंशांट कर्न ब विविध शीए।, कार्णंत्र ভिত्त घ।, 'अ' तम वा शूक शङ्ब, वा विधित्रजा (माय जाद्याता इहेरव। यनः ॥०

१। भारीय (भाषक विकि। स्पर् धाकुष शीदा, 'सञ्यूब, त्थं ज शाम त्र, खोटनाटकत वाधक श्रांडन काणी, अम्रिड, खन्म, वर्ण, इतिगडा ख शुक्रमज शानि धाक धाकि दिशादिश जिल्ला श षाञ्चान स्वर्धा मिवन क्त्रिल ख्रांस षाद्रांश ब्हेरव। म्ला ५००

४। गुर्शि अ ब्रक्त माग्य (ब्रब व कि हा। रेशांट स्डम वा श्वांडम मामामा, (शद्देव छेशमाय इंदिय। युनार ५०

न्त्रा उन्न (त्रांश अ घात अ जि छे छ ग यलग পারাসংশ্লিট রহিত) নানা বিধ है। নিয়মিত রূপে ব্যবহার করিলে নিশ্রয় निय निधिष्ठ शत्री किन्न क्षेत्रध किनिकां छ। गत्रियत व्यनागित छ।। यथा ब्रुजन, श्रीजन घा, नालि घा, जर्म शीषात्र या घा वलि थारक, भित्र वाणिटि ७ जिस्मादत छेङ वातूत रिह्न्भ- शितांत घा, विस्थान ३३ चू वन घ। এक मुश्राह्त याः आंद्रां क्हेद्व यं ना ॥०

3। निर्माद्विते कार्यक्त्री अहे यहो- अम् वि, दम अध छि, अन, विन,

वन्त्रक! वाक्ज!! वाक्जिण!!

व्यागता बिलां इहर्ड छे उम छे उम नन्यूक, ताझ-कल, शिखल, ज्लशांत उ भीकारतत मकल প্रकांत मत्अग এवर नानाविध विलाजि ज्वामि स्ला गृत्ला বিক্রার্থে আনয়ন করিয়াছি। যাহার প্রয়োজন इहेरवक जिनि, कलिकां डा ७२ नः लाल मिशित मिकिश একশেচঞ্জের পূর্বাস্থিত ডি, এন, বিশ্বাস কোং দোকানে थाश इर्द्यन।

> ডि, এন, বিশ্বাস এও কোং। वीन वीयुक यश्वां काश्वितां क वर्त्वयान প্রদেশাধিপতি বাহাত্রের

णभुत्यानि ७ अ मु छ। इ कि क्विकिटमात्र मनकि वित्रां एक त

ञोश (वं वर्मा क अयथा लश

38७ नः लाशांत हिर्शृत त्तां किलाती वालाथाना, कलिका छ।।

डेशदराङ अवधानदा व्याग्रदर्मन व्यर्शि वा-यना यटज्त मर्स्थाकात त्रांतात नानाविष ज्यक्रिय धेर्य, टेंज्ल, यूंज अ थांठनानि स्लंख गूटला म-र्मा श्रेष्ठ श्राप्त ६७३१ यात्र धवर जरेनक छ-शयुक्त विकिৎमक मर्सना ज्थां य जेशिष्ठ थानिया वावन्था श्रीकंक अयशानि श्रामान करत्व।

बक्रुक शीषांत महर्विश। हेश निश्च शुंखं क वावश्व कविदल मागाना वक्यूब ध्वर (मोर्सना, इड भर्मामत जाना उ मिखिएक शैनवल श्रेष्ट्र डिश्राव मश्यूक मर्ब-श्रकांत्र मृ जाशिका अ मधुरमङ शीष्ट्र। निःदल्य व्या-दबाना इस्।

धक मारमत वाव हादाशयुक्त जेवन २ (कोठा ७ ठाक ब ज । लिलि अक ल्याया 8 ढोका टेंच्ल ३ के । का भाकि उ डाकगा छन २ हे। का

. कुखन इषा टेडन १

उ किलं काकाल शक् जा थांश ना इहेगा विभिन्ने छि है २०६ मध्याक खबदन, धम, धम, धम, बम, धम, -क्रिश विक्रिंड उ ल्यां डां युक्ट इसं धवर मखक चूर्न श्रञ्जि भिरतारतांश व्यारतांश यश्यिक सभीजन ज (वमना, कामड़ानि, अ गृहिनी शीड़ांत्र भी छ। हकू (का ग्रांड वृक्षि इत्र । देहा व्यांड में ताहत शंक्षपूक्त । मूना अ लिभि १ होका डाक्या खन । % जाना

मर्कश्चकात मस द्वाभाद्याभा, मस्य म्ह, यूटभत इगैक्ष मूत धार मख डेख्य खब वर्ग इया ३ किछ। ॥० डाकगाखल ।० जाना

स्थाः छ ज ।

हेका बाता युथ मखलत निक्र किक (क्यथार् (महा जा) अ खन निम्ह याद्वाभा इस । एक जुक कांगल अ श्रांतकांत इहेग्रा गुथकी मगशिक विक्रिंड उ वर्णंत छेरकर्घ मन्भामिङ इत्र धवर ছुनि, बामा-िक, कूलकानि व्याद्वांगा इत । छेड्। मण् शक्त्रमुख्न ।

३ लिलि ५० डाकगाउन । ४० खाना वीविदनाम लाल (मन ७७ कविता क कंम्राभाग ।

नानानदर्गत सुम्भा विलाजी स क्या। कलिका जा खाड़ा ने । किन किन्द्र त्रांड ७१४ मश्थाक शृद्ध विकशार्थ व्याद्य। यूला २॥० इहेटड क्ष शांठ छोका।

बीताशानाथ किश्वत। ण्डनि ।

नृजन शृखक श्रश थायान कावा। बीयुक बिएक का नाथ ठाकुत युना ११० श कि लिका। किलिको जा।

मश्क्र राख्य श्रुकालदा उ किल्इ लाई-खिनीएं श्रीश्री।

वस्विद्धा । - श्री जर्गाम ।

जीतरमण्डम मख श्रानीं । किलिकां । २८२ मर वल्व जात की है होनदशंश यद्य, एए नः कदनज छी हे कार्गिन लाई दिविविद्ध भाष्या गाया। यूना १।० ডাক মাশুল ১০ অনা।

गालितिया जुत्र जाम्हर्मा लिल। शिक जो जोत बीयुक बाव नीनगांश्य हालमांत वर्ष यदत्र जानात अज अशांज लिखन, दान जान मः वक्नांगाता माद्यतिरात मग्डिक्रिय " अने यादितिया किवत हैनिक शिन" नामक रें ঔষণ প্রায়ত করিয়া প্রায় ছ । সর চিকিৎ সা बांताजाना। अध्यादांका विद्यान देशकाती पर्णादन हेश वावशात निन्धा (कल होनडा (दिक) पूत्र निर्माशात खांड क त्रिख्टिन या, कत्रन् उप्राणिन त्याष्ट्रकन इत्न छेड विका शाश इरेवन। युना जक वाकम् १ जक होका माज। डेक मिहिकनू इत्न जिनि थाज्य थाएज न हो। इरेटज म है। श्री श्री उ देवकादल है है। इरेटिंड ७ है। श्री इ हिंदू उ सानाम (बादाब हिक्दिमा क्रिका थार्कित।

विकाशन।

मोवदन (याशिनी। (ঐতিহাদিক দৃশ্য काया।)

लिशालान ज गुरशाला वास अनी ज। किनिकांडा, त्मांडा वाजात, ৫० न (श खीति, ख मः ऋ ज यदम्ह शुखकान द्वा थाथना, गूना 3 अक है। का । एक मा अन % जान।

व्यामि इंश्ल इरे.ज मग उ (रामि अथा भी खेराश यानाईशाहि। छाईल्डेमन हेलामि यागात अश्रुख श्रुख रहेर्य। निम्न निष्ठ श्रुखक अवगाना खेवम ज्यादन পाख्या यात्र।

আমার প্রণীত

हिंगि उन्नाथि जिंकि ना विकान यात्र एकिया छ। ३म थए, ३म मश्था। 3/0/0

जे ३ श मश्था। 3100 ह्यां विशाशि टेड्य ज्ञ अय मश्था। 30/0 व्यर्गदादगत मदश्यम

(तांगीता वांशन वांशन लक्न शर्ता हर्वन छोकदबांदगंत यदश्य

(श्रांग अशाशिक (गणिमन (छ छ

उलाउँठात २० भिन्म वांका ১০ শিশি বাক্স

धई वोका धक थानि शुक्क थाकित्व गांश दांता धरे किंग वर्गाध अ रेश्त नाना श्रकात श्रीत्व विंड शीषांत हिकिৎमा অভि मহজে कता शहरव। इंश निতास मत्न ভाষায় লিখিত।

> विविश्विनान ভोष्ठां इ ७८ तः कर्व उद्यानिमधी है।

3110

20

30

स्जन श्खक।

ठांक्रनीना नाडेक।

कार्गिश लाइटबर्गिन, मश्क, ज फिलें छोडेनिन, भित्रां वां जां ते ४८ वर् । ध्वरं श्रां वर श्रुकां नद्य शिश्वा।

युला ३ होका छ।क्यां छन ।

एखं कथात माम्ला ' छ अ लिभि ' नाग्र तर्मा ना अंहिक धार्मानिं इहेरिए कलिकां है है हिन्द-शाम (तल अद्य अट्डा कि का किट्ना की युक्त राव नमारी नातां विद्या निकते या १०१ आग्यां जात होते कत (श्राम ' थो अना।

প্রতি ফর্মার মুলা ३० जान जाना यकः मदल अधिय ठाति यादमत यूला यात्र जान-মাত্রন (य कांन मःখा। একরে 35 किंश लहेटल ডाक्यांचल ला शिद्वना।

उत्तर (थम।

बीठ्य (भाशत मुर्शांशांश थानी छ। न्य अक होका डांक मां छल % जाना। वय ने पण्य छोड़े कार्रिन माई बार्तिक थांथगा।

बीयु उन विकास गार्थ वयु थान्ड

म ला **डांक्यां क्रुन** (यमास शदयभ 00

मिक्टि (आध्यमञ्ज) , ० 20 ख जोकस्यां काल

অধিকারতত্ত্ব 00 किनका जा खश्च यञ्चान एय अपित्वाक मगाद ज शांखवा।

> THE INDIAN EVIDENCE ACT 1872.

> > BY

KISHORI LAL SARKAR M. A. B. L. Price Rs. 3

This is decidedly the best edition of the Indian Evidence Act that we have yet seen Babu Kissoree Lal Sircar has spared no pains to remove the difficueties which stand the distrated readers of the Act in the face. He has made the work acceptable to the public generally. Law Observer.

To be had at the Amrita Bazar Putrika Office and Tacker Spink & Co's Library.

> ञ्जनगांक ! डेल्क्क नाहेक! і वीत्रभाना।

किनिकां छ।, वल्वाकां त छ।। न. इ। भरम, शहेल एका कार निश्ला हे खिती अ सू उन खांद्र छ य खित धितः मः इ, ७ य खित्र शूखकान दा था-ख्वा। ब्रुह्मा अक है। का

श्राकां क जी(वर्गित्र लोल पछ

श्राक्।

व्यथवा ভाরতের সুখশলী यवन कवला। ना हेक।

कार्गनिः लाई (खित्रि आर्यामर्गन यञ्च लिस धावः मःक ज ডिशकिर्दित् श्रीश्वा मुना धक

> शक्र वन्न नारेक। छोयूक खरजक कुमांत्र द्वाश एनी जा

युना ३ धक होक! एक मास्त्रन ८० जिन व्याना।

माइ (खतीरक, ८न एके अ (तारक, ७ माग्य मार्ग मार्ग भार्ग रेज ग्रांक यहाय ! वाकांत कत (शंदम श्रांश्वा।

> मलाशिनौ नाउक। (कांन उत्त महिला कुछ।

युला ३ धार होका डाक माश्वन %० जाना ७० नम्रत वाश वाजात खीठे, कान मीणिका शुखकां न दश, ১১৮ न शत जाशत हिज्यूत (त्रां छ दिवलक नाथ (पत पाकारन धवः काम नाजात खशी (याइन मटख्त (लन) नः खरान जायात निक छे था थ रा।

व्योगन्य लाल शद्यांशाशा

व्यात्वा डेशनाम ।

शैं जियु जिं महिज जां बरवां श्री ना। म जर्शि थां-तमाधिशि जित धकाशिक मुख्य तकाति छेशनाम खारन नागक शुखक थारि जिंडि बुर्मिकादित धक थाः उ उन्मार्श कहेला। योशांत श्रीका करित किन निम निथि जाति वना मह शख (श्राम क्रिलिइ शाहेट शाहित्वन। मूना २॥०। ज्ल वाकाहे ७ है:का धवर छाक याञ्च ॥० काना।

कवांतल लाहे बाति ३৫ नः हिज्ञां द्वां ज शाइकशाए। नर्भात्र।

এই স্থানে উত্তম উত্তম ফল ফুল ও লভার गांछ ठांत्रा ७ कलम श्रञ्ज व्याष्ट्र। य त्रक्षमत यादात श्रीषाजन इदेरव मूला भागिद्देल भादि शांतित्व। आत (मणी अ विनाजि शांताण आग ३२६ श्रेकादित कलग श्रेष्ठ इहेग्राइ। इत्राम्ब अ यना यना कून भाष्ट्र वह ठिक (बालात्न म्या नागाई ठिख दार्थन कतितल इशापत मेतियांत (कान गञ्जातना थाएक ना। जाशत णात जन निशा गांच वाठांचेट च्या जथात्न गांट्च्य म्ब किना युन छ ध्रत्रा वात कात कात भाउरा यांग्र ना। याञ्चात्मत दानात्नत छे थक्त यञ्च अ खाका व्याटि वर्ग गर कर्त्या व्याग भव भारि दिन गाह मकरलत नाग अ नमत निया छेख्य काल वाद्या भागिक कतिया विनि य क्रिश विलिद्यन दिलल, इंछिगादत वा (नोकांस श्रांशहंसा विवा विकास छत्मा कति (मर्भात त्रांका) कित्रमात उ वड (लाकान मज मङ्कारत धई जां जी शे नर्भ त इरेट ज स स नाम दिन व वार्यभाकी स शांच्र मकल व्यवनाई लहेर्वन। शांट्इत नाम अ परवत जालिका इं: ता जि छा व बाह् बावनाक इहेल विनः मूला शार्वा देश मिव।

विशासि म वि श्रकात (मणे अ विना । अ विना । माजाईगात भागा हित्रशारी कूटलत विह यथन याङ्। त्रांभंगं क्रि. इस शांख्या यात्र । इक्षा पत्र बिम्ब वांहक इहेट । तात्न वांशिक 18 है।का वांवाय मट्ड इया

ध्यां म ४० तकः त जार्वत कलम शां उत्रा यांश । हेशादन मार्था न्यः नक छ लहे छेश्क्र छ व्यक्ति वृह्९।

> श्वीत्र्डा भागन हत्येभाशाः श गाईकशाए।, नर्भार, क लका छ।।

अजञ्ज-निक्नी नाढेक।

मूला : ०/ शाक्त कार्ति मिटगत প্रতि ५० योशका कित्रियम जाकारमञ नांग, शांग निश्या मनवता बीयुक वाव् किनिकां ७ १ वर करने छि । किनि । त्रांदे जा किन किन किन किन किन किन किन किन

गकः यहल ग मा था थि।

75

बीयुक वायू निवं वहत्य ह द्वां भाषा हता न मिनवस्त (मन विदिम्स किनात नाथ यक्षमात त्रम्भाश क्रिश्व क्रिश्व ३० ' छे. भण छ छ मजू मना व मिलश ' পद्रमं नाथ नूद्शां भाषां व जाता वांश्यां जवन वत्नां भाषात्र वर्भ्य त्यां भाने भूव ५० । जीशिक मुत्थाशांशांश मिनकार्ष " ननीत्राय यूटशाशाधात्र शाहीकावाहि व्यमन क्यान किश्रो किलाइल महमन मिर ०००० ' इति योद्य मृ व काचूनशह जिलोश्र

'' इर्ग मान जाठाश (ठीयुडी युक्तां हा यश्यन गिर ।।।

" উত्তम हला यहेक आनम्बामा ' इतिन हिन्द्र जारा (मार ज्ञानावन

हिडलाल मिक्की मानकत नहीं मान 301/0 ' ब्राम (वहाबी रुख ब्रामशूब हाडे

' लाल भिव जिंछ मिः छ क। 'कालि नाथ विश्वाम जनानी विश्वणाल 30

धकिए (मदक्ठेत्री शाविनक लाइ (खत्री वानीशक क्षा कुमांत्र (कनांत्र नांत्राञ्चन ग्रांत्र, वांक्ष्म वांक्षमांकी

অম্ভ বাজার পত্তিকা।

मन ३२४२ माल २०० कालक्षन वृष्ट्य्यिकात ।

इं ल: अर्थशीत ভারতের শ্রী হইবার যত্ন। ভারতব্বের ব্যবস্থাপক সভায় " (নটিব কইনেজ' र्विल नागक अक्छी नृङ्ग आईरनत পाछ मिशि छेशच्छि इहेश्राट्य। अहे भाख निभिन्न ऐएमणा अहे। अपनिभीन म्हाबीन ताजात। এখন निज निज हैं। कथानाय छोका श्रम् कर्तन, किन्छ अहे जाहेन श्रम् । ब्रेक्टा कतितल बेश्दबजदम्ब छैं। कनामाय छै। का প্রস্তুত করিয়া লইতে পারিবেন। ইন্দোরের মহারাজা इनकतं आश्वनात है। कशाना डेठाईया दिया विही व भवर्गयन्त्र हैं। कथाना होक। जिंड कित्रा लहेड - स्वीकृष्ठ रून। वत्रमा तार्जात छाका अ गर्गर्या होत हैं। कमानाश श्रमुङ इहेरव। अहे छूहे ता जात अधि थि छ व्यथमत र अयोग वाध र श भवन (यन वे वर वर्ष स्तर পাও लिপि উপস্থিত করিয়াছেন, কিন্ত ইহার আরো कान कर डेशाधि थाछ इन ना। शालि ग्राध्यक वराज তাঁহাকে (এমপ্রেদ অব ইণ্ডিয়া) "ভারতেশ্বরী" উপাধি थिमानित थाखाव इहेग्राष्ट्र। हेश्ताष्ट्रा थथ्य এ पिर्न वाणिका कतिएक वागयन कर्त्रन। वाणिका छेथलएक এ দেশের রাজনৈতিক বিষয়ে প্রবেশ করেন। ক্রমে त्राज विषातालास देशापत आधिপতा रस। তৎপরে वानिका मोकर्यात नियि छ कि ছ शन প্राश्ति या छ-लाम रय। এ অভিলাम পূর্ণ হইলে, ভারতব্যে কিছু রাজ্যস্থাপন করিয়া আধিপত্য করিবার ইচ্ছা হয়। म আশাও বিধাতা পূর্ণ করেন। তদপরে রাজ্য विखादित वाना वलवं इया म वाना अकल र रहेशाएए। ७९ शत्र ভाরতব্যে দিলির স্থাটের যেরপ আধিপতা ও সন্মান ছিল তাহা প্রাপ্তির আশা হয়। विधां जा ना जा ना ज मकल क्रिय़ा एक । এখন जा हा-(मत रेफ्ट) रहेश एक जात्रज्व वामीता रेश्न एखत ता खीरक " ' मिली शती " विनिया जा किन । जिन मिलित मिश्श-রাজারা তাঁহাকে " রাজচক্রবর্তিনী" বলিরা অভিবাদন करतन। पिल्लित मयारित मयूरिथ ভারতবর্ধের রাজার। (यक्त १ धूलां स लू ि ७ इहे इर्। मनान कि ति एडन, हे १-लएखत ताष्ठीरक व (मनीय ताष्ठान मह क्रथ मन्यान (पथान। आवात " ভারতেশ্বরী " পদ প্রাপ্ত হইবার আর একটু নিগ ঢ় তাংপর্ঘা আছে। रेश्तां जित्राम करतन (य, এमिटम यमि जैंश्तां তাঁহাদের আধিপতো অধিক দশক্ষিত, ততাচ তাঁহারা विद्यानीय, अ विद्यानीय ताजात छे थत का शत अकृ जिय वामिक डेशिष्ट्र इय्र ना। यिष इंश्लिखंत ताका विथान অবস্থিতি করিতে পারিতেন তাহা হইলে ইংরাজ গবর্ণর জেনারলের আজাধীন হইয়া বরদায় গমন जािज वहें जा मूत हरें । यमि महातां नी ठाँहात वक कितिलन। भवन मिन वहें करि वक वक कित्रा व পুত্রকে ভারত রাজ্যের ভার অর্পণ করিতেন এবং দেশীয় স্বাধীন রাজাদিগকে এক রূপ বুঝাইয়া দিয়া-ভারতব্য ইংলও হইতে স্বতন্ত্র হইত তাহা হইলে ছেন যে, তাঁহারা স্বাধীন রাজা নহেন, ব্রিটীশ তাঁহারা নিশ্চিত হইতে পারিতেন, কিন্ত ইহার কিছুই অধিকারের প্রজা। তথাচ তাঁহাদের একটী বিষয় कतिवात जांशाद्य माथा नारे। ইशत (य (कान शथ ल्लाङ्ग इरेशार्ष्ट्रम्। मिलियत शरमत डेशत अरमनीय लारकत सार्जावक जिल्छ अथा आहि ववश जांशा विद्वान कर्तन यमि देश्लाए वर्त ता जी अहे शम ही अहल करतन जाश श्रेटल जाशत जिलत अपन अपन जाता निर्णत क्रा जिल् अ व्यक्षा जिल्ल इरेड शारत। वात वक्षी कथा जाए। अपनीय बाजा मिरगंत यत अथन अ

इंश्तां इंग्नं का यान यान जातन (य, विद्नानीय অধিকার মধ্যে এরূপ লোক থাকা নির্বিন্ন নহে যাহা-দের মনে স্বাধীনতার অভিমান বিরাজ করিতেছে, इंश्न एखत ता जी फिली थरतत मिश्हामान यमि এकवात উপবেশন করেন তাহা হইলে লোকের মন হইতে এই অভিমান অন্তৰ্হিত হইবে। मिপাহী যুদ্ধির পর হইতে তাঁহারা ইহার নিমিত্ত আবো অধিক ব্যাকুল হইয়া-ছেন। শিপ शे युष्कत পূৰ্বে এদেশীয় স্বাধীন রাজা-फिरिशंत माइ जिछीन श्वर्गरामें मिक्त श्व द्वाता श्व-न्भादतत मचक्त निर्वत्र कदत्न। এদেশীয় রাজারা স্বাধীন विद्यान कि तिया गिवर्ग स्थिन है है। इस एक मिल का कि का भन करतन। मिथाशे युष्कत व्यवमान इहेल व मिथीत स्वाधीन ताका मिरात यन जंगु छे छेना इय। जाराता (म (थन (य, इेश्ता जिता मिस्ति छ (शका कित्रा आया-थात ताका অधिकात कतिल्लन। लिलाही युष्कत ञ्चनान रहेल ग्रवं स्मिन् जीवन मूर्जि थातन करतन তथन তাঁহাদের আঢার বাবহার দেখিয়া স্বাধীন রাজারা ভয়ে কম্পিত হইলেন। রক্তপাত এবং শক্রন-নিগ্ ত তাৎপর্য্য থাকিতে পারে। ভারতব্য সহস্তে যানের দীমা কোথায় গিয়া পরিদমাপ্তি হয় ইহা তাহার। পাलि য়ামেন্টে একটী আইনের পাণ্ড লিপি উপস্থিত স্থির করিতে পারিলে না। তইংরেজ গ্রন্মন্টের ভাঁছাদে इहेशाएए। हे॰ जिए श्वा व विश्व जात्रवर्ष इहेट त मिक्तित जेवत जाका तिहलना। हे॰ ताजि हिर्गात धर्म त्राष्ट्रि। ज्ञात्नत छेशत তাঁशता আत निर्दत कतितन न। इंश्ताज জাতির ধর্মা জ্ঞান তখন অন্তহিত হইয়া যায়, তাঁহারা वाञ्चतिक ভावधात्रन करतन। ञ्चठजूत गवर्गयने पिथ-लिन এ (দশীয়দিগের স্থানীন গার মূলে অন্তাঘাত कतिवात वहे ऋयाग डेशिइड। वहे डेएमना मन्भन कतिवात निभिन्न २४७२ थ जास्म लर्ज कानिः (मभीत याशीन बाजा मिगरक পোষা পুত রাখিবার নিমিত मानम পত অर्भेन कतिलन। ताकाता जातक वरे मानन প্राथ इरेशा कुठार्थ इरेलन, उथन छाराता ভয়ে मिनिश्ता इरेशा ছिल्ला। डाँश्ता वियु ड रहेला (य, डाँशता याधीन। शाधा भूज अश्रान्त निमिन जिले गवर्गराग्डेत निक्छे इहेट अञ्चर्छ अह्न कतिल তাঁহারা এক রূপ আপনাদিগের অধীনতা স্বীকার অविधि এक এक कतिया ताजाता हे श्ताजिपिरात निक्छे এक এक छी साधीन सत्र जर्भन कतिएं लागिलन। गंवर्गराने जमविध याधीन ताजा मिरगत मदन जाग क्रथ वावश्व क्रिंडि लागिल्न। शुर्क डांशिमिगरक ममक दक्त यात्र পত लिখि তেন, তদ্বধি অধীনস্ রাজার প্রতি যে রূপ ভাবে পত্র লেখা উচিত কাতার কয়দাতারা উদ্যোগ করিয়া যে পথ পরিষ্কার পতের मেই রূপ পাঠাপাঠ আরম্ভ হইল। তাহার করিবেন, গর্লমেন্ট সহজে মফসলবাসীদের নিমিত্ত পরে লড লরেন্স দিলির দরবারে দেশীয় রাজা- দেপথগুলি পৃষ্কিরার করিয়া দিবেন না, কিন্ত তথাত मिगरक निमञ्जन कतिया छाँशामित गर्क थर्क देशाङ अक्षि विरम्ध छेनकात इहरव। मकखनवामीता क्रिलिन। जात श्रेत लर्ज स्थि र्याथ भूरत्र त्राङ्गारक यिन विश्न वहे छेरनार्ग क्रिट्स र्यालयां कर्तन প্রতাপ অখণ্ড, যদিও দিল্লীশ্বর অপেক্ষা রাজারা দরবার হইতে দূরীকৃত করিয়া দিলেন, তার পর বরদার তাহা হইলে গবর্গমেন্ট কলিকাতাবাদীদিগকে যে সত্ত্ব गारेकांशाएत मिश्हामन लहेशा लड नर्य क आशिव उथार्थन क्रिलिन। व्यन्ति बाज्यक्रिक वन्ती क्रिया তাঁशत ताजा वाशतक मिलान। जर्भत उ मिसिया व्यविश्व ति ति शिष्ट । विश्व व दिन्नी ते शिष्ट व ति । जाता इंश्ल एखत ता छो कि जिलो यती तलिया ता ज जिल ক্ষতি এবং স্বার্থ উপেক্ষা করা ইংলণ্ডের কার্য্য নহে। দেখান নাই। এই উদ্দেশ্য সম্পন্ন করিবার নিমিত্ত করেন। ইহা দ্বারা যে অনেক অত্যান্ত হয় তাহাত वाक श्रक्षवा वह निमिन्न क्रिक्त जावन विश्व পদ ছিল, দেই পদটী প্রহণ করিবার নিমিত্ত নিতান্ত উদেশ্য সফলতার কিছু মাত্র ক্রেটিনা থাকে এই নিমিত্ত আশ্বার হয় তাহাত্ত সকলে জানেন এবং ইহা দারা যে, -নিজামকে দরবারে আনিকার নিমিত্ত গ্বর্থমেন্ট আনক অনিক হয় তাহাত বোধ হয় কেই অস্বীকার এ রূপ যত, করেন। এই উদ্দেশ্য স্থাসিদা করিবার নিমিত্ত (मिष्टिव कहेरनज विज ভারতব্যের ব্যবস্থাপক সভায় डेशिश्डि इरेशा हि এवर शामि शास्त्र गराता गराता गिरक "जात-जिथती " जेशाथि आमान कतिएण्डम। युवराक जात्र-वर्ष आंग्रम करांश ७ (मिनीश काशीन शांकांश। (मिथ-

डेक्र। इंशाउ डाँशत डिशत व (मनीय्रामिरगत स ভিজित উদয় হয় নাই, ভয়েরও উদ্দেক হইয়াছে, ভালঃ वां ज श्रक्षता अहे क्रिश गंगना कविष्ठिएन। अहे स्वार তाँशता इंश्ल एक्षतीत्क जात्र क्षती जेगावि अनाः कतिद्वन मश्कल्भ कित्रशाष्ट्रन। भालिंशायने कूड विक्रेतिशां कि जात्र ज्यती छे भाषि ज्यतान कित्र क ত একটি দরবার হইবে এবং তথায় এ দেশীয় রাজা: তाँशक ভाরতেশ্বরী বলিয়া স্বীকার করিতে বাধা श्रदेवन। यूजाहन महिनीय वावश्रां विधिवक श्रेटन तांकाता हेक्ছां य जातक्हां य जिहिना तांकात गुजा निकर पिका প্राचित्र करित्र वाधा इहेरवन। जः भरत विहि» গ্বৰ্থেন্ট হয় ত প্ৰস্তাব করিবেন যে, দেশীয় রাজার রাজ্যের বিচার ও রাজস্ব সংক্রান্ত ভার লইয়া রাজ্য এখন অবধিই তানেকে এই রূপ প্রস্তাব করিতেছেন ववः ज्या ज्या व (मनीय साधीन ताजागन वासमार জियानात्रगाद्धत (व्यभीटि डेशनीड इहेर्यन। हेशाटि मञ्जल कि अमञ्जल इहेरव छाहा विद्याणा जारनन, किन्छ य फिन शक्षां व देश्तां जा वाशिकात कतिया एक मिर দিন অবধি আমরা গ্রন্থেটের মিকট হতাদ্র হই-

यक्षात्मत यिडेनिनिन्नि नि मः का ख भा क लिला

कलिकां जात शिष्ठिनिभाषा लिए मियद्य जर्क विजर्क षांता (मटणंत অশেষ মঙ্গলের मञ्जानना। शिडेनि-শিপালিটি শুদ্ধ কলিকাভায় নাই, মফরলেও আছে। कलिकां श्रेष श्रिक विजेतिका भागिति । विशे विशेषात्र वा, यक्षरल उ हेरात वाका पात वार्ष । नर्जभान कर्क विकर्क ष्वाता यमि कलिकाणा यिউनिभिशालिछित (कान छेश-কার হয়, তবে দে উপকারের প্রতিভা মফস্বলে প্রতি-ভাত इहेवांत मञावना। , शहे तथ उथकु इहेवांत वात् अकि द्याग डेशश्रिक इहेग्राह्म। किनकाजा अ सक्खल सिडेनिमिश्रीलिंग व्यादेन এक मसुस वाव-স্থাপক সভায় উপস্থিত হইয়াছে। কলিকাতার কর-দাতারা যত পূর্বক এখানকার মিউনিশিপালিটির যে কোন উন্নতি সাধন করিতে পারেন, মফস্বলবাদীর। তাহার দারা উপকৃত হইতে পারেন। তবে গ্রন্থেন্ট इण्हार्श्वक कि व्ययज्ञाय ज कथनरे वामानिशतक किছू अमान करतन नाई ध्वर कतिर्वन ना। कनि-व्यमान करतन, यक बलवामी मिशे कि छेश व्यथान क ति वाथा इहेरवन। अहे निभिन्न सक्षलवानी मिरात भरे अकृषि समग्र छेशिष्ट्छ। अमग्र छाराता निक्रिड थांकिटल (एटलां विट्लांब ज्ञानकां क्रिवान। গাবর্ণমেণ্টের যেরূপ অভিপ্রায় তাহাতে ক্রে ক্রে पिटणंत मर्वव मिडेनिणभानि विखात रहेर्व, ञ्चताः गिडेनिमिनानि वाता अथन नगरत छन-নগরে যে অপকার কি উপকার হইবে ভাহা ক্রমে मर्बज ছড়। ইয়া পড়িবে। মিউনিশিপালিটির বর্তমান वाश्वाश (य, वात्मक (माव वाद् वाश मकत्रे सीतर क्तिर्वन ना। यथन (मर्ग्त यर्था यिखेनिन्गिर्गिनिष् विखात इहेरच उथल प्लिंग्स थहे स्थ ज्ञाना विस वायवादात इक्ति श्रेटव। धरे धानिक धन् वायवात निगांत्रदेशत स्ट्यांगं अहै। यथन कगाद्य नगाद्य मिष्ठे-निमिश्रामिकि विचारिन प्राटम यहात्र कहात् यह, करत्न

সাহেব কলিকাতা মিউনিশিপালিটি সংক্রান্ত যে পাণ্ড্র- তাহা করিতে পারেন, সেখামে তাহার পক্ষে আর এত য়াছে। এই দোষ গুলি সংশোধন করিবার নিমিত্ত গবর্ণর ইচ্ছা করিলে সমুদয় উলটাইয়া দিতে পারেন कलिकाञानामि दिशंत अत्निदक यञ् कति दि एकन, जा-श्ता किय़ अत्रिमार्ग हेश उ क्र किया इरेगार हन। यक्षाला निवाज (य यिजिनिकाशाल जाईन इहेटजिए তाङाতে গাবর্নেন্ট ব্যবস্থা করিতেছেন যে, মিউনিসি-भालिषित याक्षा (य मग्नम कुल, ডिमार्भन मती, প্रভৃতি আছে তাহার বায় মিউনিশিপানিটির ৰহন করিতে इहेरव। এ ममूपश वाश वं वावित भवर्षिय वहन कि तिश আমাদের স্বস্তে নিক্ষেপ করিতেছেন। শুদ্ধ ইহাও শাসন থাকিবে তাহা হইলে বোধ হয় তাহারা কৃত-नारतता रेज्या कतित्व तानायाति, कि नाखिर्दतत छोका कुछनगदत बाग्न कतिए शातिर्वन। अहे थातात किश्म किलकाण भिजेनिमां भानि आहेत मनि-रविभि उ इया क्रमि जिसि क्रिया आर्थनाय भवन स्थि अहे व्यः भाष्ठी क निकां जात्र शिक्षेति भाषा निष्ठित वाहेन इहेट व्यास डिठाइसा पिसाएएन। यकः यदलत यिडेनिनिना-লিটির করদাতারা এমনি কর ভারে ভারাক্রান্ত। यक्तिक, जिन्दिभाती थां जित वास जाशा कित অপিত হয় জাহা হইলে তাহারা রদাতলে যাইবেন। कलिकां जात लां कि यकः यल जार भंका भंज छान धनी, সেখানকার লোকে যে ভার বহন করিতে অশক্ত यकः यनवामीता (म ভात कि क्राप्त वश्न क्रियन ? यकः खलवामी मिरात इंशत धी जिवाम करो जि कर्लवा। তাহারা প্রতিবাদ করিলে গাবর্ণমেন্ট তাহাদের প্রতি-वादित প্রতি উপেক। করিতে পারিবেন না। কলিকা-তাবাদীরা জিফিশ মনেংনীত করার ভার গ্রহণ করিতে প্রার্থনা করিয়াছেন, কিন্ত তাহারা বলিতেছেন যে, गवर्गरान्छेत (कान क्रामन क्रिमनात्रिंगत कार्यात छे शत थाकि दिन ना। कियमना दित्र का कत्रमा छा-फिरात प्राता नियुक्त इहरवन এवः छाहाता साधीन ভাবে মিউনিশিপালিটীর কার্য্য করিবেন। গ্রবর্থমন্ট কোন রূপে তাহাদের কার্যাের উপর শাসন করিতে পা-রিবেন না। গ্রন্থেণ্ট এই শাসন রাখিতে চান বলিয়া व्याद्दिन এই শাসনের ব্যবস্থা করিয়াছেন। করদাতারা इंश लहेश जाति शालर्याभ कहिर्डि इन। नीर्भित পক্ষ হইতে এই বিষয়ের নিমিত্ত কলিকাতার আনক छिनि धनाणा मञ्जाख लाक लिश् हिनाक श्रवनीत्र निक छे शयन करतन अर (लश् छिना के शवर्न अर्-দিগকে আশ্বাদ দিয়াছেন যে, এ বিষয়ে তিনি যাহাতে ভाल रয় তাহা করিবেন। মফফল মিউনিশিপানিটী वाहित शवर्वयाने कत्रमणिकिशक क्रिममात वियु-क्तित जार्रा वार्यन कितिराय शिंज्छ। कितिराज्य के প্রকৃত পক্ষে তাহা হইতেছেনা। কমিশনারেরা বটে कर्माणाजिकित्रांत द्वांता नियुक्त इहेट एहन, किन्छ छोहा-ज्य खाधीन जादन कार्या करा स्कठिन। शवन्यन्छे शेटम शेटम इराज अजियक्तका कितिद्वन। यकः बदल ষ্টেদিগের সেখানে অখণ্ড প্রতাপ। কোন কমিশনা- র্নমন্ট বহুবাজারে একটি বাটি ক্রয় করিতেছেন। সার রি রের এরপ দীখা নাই যে, মাজিপ্টেটদিগের অমভিত্তে চাড টেম্পালের সন্দেহ আছে যে,মহেন্দ্র বাবুর সংকল্পিত কোন কার্য্য করেন। স্তন্ধ ইহাও নহে। যত কমিশবার বিজ্ঞান সভা কার্য্যে পরিণত হয়, কি না। এই নিমিত্ত নিযুক্ত হয় খেহার ছই তৃতীয়াংশ করদাতারা নিযুক্ত তিনি কতক গুলি নিয়মে আবদ্ধ করিয়া উহার দাহায্য कितिदान अवर अभित्र अक जान नावन हमने नियुक्त कित-বেন। এত জিল জেলার মাজিছেট, মহকুমার মাজিছেট এমন কি যাহারা বিজ্ঞান সভার সাহায়াধে অর্থ দিতে

কুরেন। তাহাদের প্রতিবাদ সফল হয়। আবার বেন। স্তরাং গ্বর্গমেন্টের পক্ষে মাজিষ্টেট, ডাক্তার তাহার। দেশের বিশেষ উপকার করিবেন। টেম্পল সফঃস্বলে একলা মাজিষ্ট্রেট ইন্ছা করিলে যাহা ইচ্ছা যতু করেন দে দিন মহেন্দ্র বাবুর পক্ষের লোক এইরূপ লিপি ব্যবস্থাপক সভায় উপস্থিত করিয়াছেন, মফস্বল। গুলি কমিশনার থাকিতেছেন। এখানেই গ্রব্মেন্ট্র মিউনিশিপালিটিতে যে কয়েকটি গুৰুতর দোষ আছে শাসনের সমাপ্তি হইতেছেনা। কমিশনারেরা যাহা যে দেশে অন্নের স্বচ্ছলতা নাই, সে দেশে বিজ্ঞান চর্চ্চা ইহাতেও তাহার অনেক গুলি দোষ সনিবেশিত হই- ব্যবস্থা কৰুন বিভাগোর কমিশনার কি লেপ্টেনেন্ট হওয়া কঠিন। মসুষ্যের শরীর রক্ষার যতু অগ্রে তংপরে यकः यनवामी मिर्गत अ विषयः अ किছू প্রতিবাদ করা উচিত। (लপ টেনেন্ট গ্বৰ্ণ যদি কলিকাতা ক্রদাতা-দিগকে এ বিষয়ে কোন স্বীত্ব পরিত্যাগ করেন তবে यक्षमनामी किर्गत् अ अ श्र श्रीत्रां क्रित्र वाक्षा इहरवन। यकः यनवामीता यमि शवन-(यतने अरे थार्थना करतन (य, यथन यक्षालत (ठर्शत गान गालियों है जाएलन जथन मगुन स किंगनात के कत-थाकिन। এই आईन द्वाता गवर्गयने এই वात्र छिल पाठा कर्ज्क मानानी इहाल गवर्गयानेत मन्ना न নয়। যেরপ হইতেছে তাহাতে কমিসনারেরা ইচ্ছা কার্য্য হইতে পারেন। ব্যবস্থাপক সভার কোন কোন ক্রিলে এক মিউনিশিপালিটির টাকা অপর মিউনি- সভ্য কমিশনারগণের তিন ভাগ ক্রদাভূদিণের দ্বারা শিপালিটির ব্যয় বহনার্থে অর্পণ করিতে পারিবেন এবং অপর এক ভাগ গবর্ণমেন্টের দ্বারা মনোনীত হও-অর্থাৎ কৃষ্ণনগরের মিউনিশিপালিটির টাকা কমিদ- য়ায় প্রস্তাব করেন। বাবু কৃষ্ণদাস পাল আপত্তিনা क्रिल (वाथ इय़ এই প্রস্তাবই আহ্য इইত। यु कि क्रि-भनात गर्वत जिन जागं कत्र मात्र प्राता यानानी ज इय जारा इरेल क तमार् मिश्तं क मण्या कि इ त्रिक्व इहेरव। यक्ष वलत यिखेनि भिर्णालि वि वाहेनि অনেক বিষয়ে ভারি নিপ্পীড়ক হইবে। এখন यञ् कतितल इंशात ञात्मक मः लिशिधन कता यात्र। यक-श्वनवामीता মনোযোগ করিলে অনায়াদে ইহার मश्माधन कतिए भारतन। यिखेनिमभानिष्ठि षाता দেশের উপকার আছে কিন্ত গ্রবর্ণমেন্টের এটি অন্যত্র (मायन यस। यिजनिमिनाभानिष्ति प्राता श्वन्यमे क्रिय क्रिय ग्रेवर्ग्यान्छेत श्रानक वात्र श्रेक्षत छेश्रेत व्यर्थन क्रिडिएह्न। (द्रांष मिन क्रिय़ां श्विनिक ভয়ার্কের বায় গ্রন্থেণ্ট আমাদের ক্ষন্ধে অনেক পালিটীর দারা ऋল, ডাক্তার খানা প্রভৃতির বায় व्यामार्षत ऋस्क निर्क्ष क्रिवांत स्यां क्रित्र क्रियां ছেন। এই সময় উদ্যোগ না করিলে শেষে অञ্ভাপ करिए इहेरव। आभाष्मित मुख् विश्वाम (य, आभार्भ উদ্যোগ করিলে অনায়াদে এই ভাবী অমঙ্গল হইতে निखात পाইতে পারিব। ক্যামেল সাহেব মিউনি-শिशालिछी आईन यथन প্রচার করিবার যতু করেন তখন যেরূপ দকলে বদ্ধপরিকর হইয়া দ্ভায়মান इहेश ছिल्नन, जावात (महे क्रथ प्रधायमान इडेन, (म-वात्र (यक्तर जय लां इरेग्ना ज्वि वर्गत्र (मरे क्रिश लां इरेरिन। (छेन्शल मार्टिन कारियल সাহেবের থায় জন সাধারণের মত উপেক্ষা করেন না, প্রত্যুত আমারা দেখিতেছি তিনি সাধারণের অনতি-कार्या इख्रक्ष क्द्रबन ना।

विख्वान मछ।

টেম্পাল সাহেব প্রস্তাব করিয়াছেন যে, যদি ডাক্তায় মহেন্দ্র লাল সরকার তাঁহার বিজ্ঞান সভার নিমিত্ত ৭০ হাজার টাকা চাদা দংগ্রহ করিয়া উহার ৫০ হাজার টাকার কোম্পানির কাগজ ক্রয় করিতে পারেন এবং यात्म এकलंड छोका छामा जुलिएड भारतन डाहा इहेटल थिनाद्य थाखाव कतियाद्या अदमभीय अदमदक्त এইং জেলার মেডিকেঃ জিলারেরাও কমিলানার হই- প্রতিশ্রুত ইইয়াছেন তাহাদের মধ্যেও অনেকের এ

जन :२४२ जांना २०७ क निधन विषएश मदमङ् आष्ट्र। य जिन एंन्यान मार्ड्य नीरगत এবার যদি উৎসাহ সহকারে যতু করেন তাহা হইলে এবং তিন ভাগের এক ভাগ কমিশনার থা কিতেছেন। কালেজের সঙ্গে মহেন্দ্র বাবুর সভা একত্রিত করিবার मल्जिङ् প্रकाम कर्त्रम। उँ। श्रंत मश्किः श्रंड विषय कुठकार्या इ छशात প্রতি खाडां वडः माम्बर डेश खिडाँर्य। वान िखा। विकातित (श्रीम वाक्षे इरेग़ डेरात उপामक इहरव अक्तर्भ (लाक अप्तर्भ अथन अल्या नाहै। यार्ख वाव यथनिति गृहर विकानिक छे थान ए एखार नियिज জন সাধারণকে নিয়ন্ত্রণ করেন তখন তিসি इंश्रात म्लास পরিচয় প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ফাদার লাফে । इंश्त वित्निय পরিচয় পাইয়াছেন। অভাব না इंहरल উহার পুরণ করার অভিলাস হয়না। एउ দিন এদেশে (लाकित गत्न विकान निकात हेक्ट्रा वार्थना इहेट উৎপত্তিনা इইতেছে ভত দিন বিজ্ঞান সভার কার্যা ञ्चाक शूर्वक छला कि जिन। विकारन अ अ जिन्ना भ এकि । जिल्लाम (ভाগ। গৃছে অमन। थाकिल लाकित विलाम ভোগের ইচ্ছা হয়ন। মহেन वांतू এक খানি মাসিক পত্রিকা প্রকাশ করেন। তিনি এখানি অতি যত পূৰ্বক লিখেন। লোকের জানিবার (यागा इशाउ वास्मक विषय थारक। किल जिन জানেন যে এদেশে তাঁহার মাদিক পত্রিকার কত আদর। याश इडेक जिनि (यक्त श यक शूर्वक এই मजात अञ्चीन कतिरिक्त देशांक कांशांत कृष्कार्या इत्रा कर्छवा অন্তত দেশীয় লোকের তাহার লঙ্গে যোগ দেওয়া উচিত এবং মহেন্দ্র বাব্রও উচিত যে, তিনি এরপ তাবে এই কার্য্য আরম্ভ করেন যাহাতে তাঁহার উদ্দেশ্য সফল रहेट शादा। जिनि यपि लीशित काल्लित महम योग मिट्न जारा इहेल जाहात कुनकार्या इन्यात कठक ञ्चिथा १३७। आत किছू ना १উक छारा **इ**रेल डाँशंत जार्थत जारनक माशंया **इरेड। जिनि** ৰোধ হয় উত্তমরূপে জানেন যে, টাকা সংগ্রহ করা कड कठिन काজ। ।। १ वध्मद्र डाँश्र ग्रांश वाङ्ड অংশে নিঃক্ষেপ করিয়াছেন। আবার মিউনিশি- ৮০। ১০ হাজার টাকার অধিক তুলিতে পারিলেন ना। यादात छानात विद्या मिह कतादेख छ्य বৎসর লাগিয়াছে তাঁহার তাহা সংগ্রহ করিতে যে কিছু -क्छ इरेरव जारात कान ज्व नारे। जिन मगूनम টাকা যে সংগ্ৰহ করিতে পারিবেন না তাহা ও বোধ इय़ जिनि जातन। जानात (लश् छित्नके गनर्भत যেরপ প্রস্তাব করিতেছেন তাহাতে তাঁহার ৫০ হাজার छोकांत (काम्भानित कागज शांड ताथिए इहेरवा ৫० शाजात छोकात स्रम २ शाजात छोका। এই पृष्ट श्कांत छोकार्ड मङात यामिक वाग्न मश्कूलन इश कि ना मद्भर। ठाँमा ज्ञिता कार्या केता यक मर्ज এবং উহার উপর যত নির্ভব করা যায় ভাহা আমরা मकल्लाई जानि ञ्चताः जिनि यिन ४० हाजात छोका मश्यार करिएड शास्त्र जारा रहेल डाँरात मडात्र यञ्ज भूखक এवर जागांग विषयांत निर्माण ७० राजांत छोका यां व थाकित । जिन कि वित्वहना कर्त्रम ইश्ड डाँश्त काद्य हिन्दि ? जिनि य आत অধিক টাকা সংগ্ৰহ করিবেন বোধ হয় তাঁহার সে वां भा नारे। वां मता वरे निमित्त डांराक वां वांत অञ्च রোধ করিতেছি (य, তিনি লীগের কালেজের সঙ্গে (यांग (मन। जांश इहेत्न डेज्राइहे यज्ञ इहेवांत मञ्जा-वना। मडा उकारलाकात कार्या वक गृह, वक भूडाकी न এক যন্ত্রালয় প্রভাত দ্বারা চলিতে পারে। কোন কোন সভার সাহায্যার্থে গ্রন্থেন্ট একটি গৃহ কয়েক বৎসরের অধ্যাপকও উভয় কার্য্য সমাধা করিতে পারেন। মাজিট্রেটগণ মিউনিশিপারিটীর চেয়ারম্যান। মাজ- নিমিত্ত বিনা ভাড়ায় প্রদান করিবেন। এই নিমিত্ত গব_ আমরা মহেন্দ্র বাবুকে এই নিমিত্ত পূর্বেত্ত অহুরোধ ञाञ्दत्राथ कतिद्वि । ञागादिन ञाञ्चि जाञ्चि क्लिन विथन मगग्न इग्न नाई। छाराज विष्णात छिए। भा उ डेबमांश्यमि धकाविछ इस, जांश्रे श्रेटल धामा वल्ल श्रियाद्व विख्वान हर्षे इहेबात मडावमा। यद्द्व वायूत बात अकि कथा यहन कता छे हिछ। याशा छै। याशा मद्भिष्ठ धार्थ पिए ज सी कुछ इहेशार हम छै। हा से छै। इसी

THE AMRITA BAZAR PATRIKA.

CALCUTTA, THURSDAY MARCH, 1, 1876.

It is definitively settled that the import duties are to be at last abolished.

--000-We are glad to learn that Lord Ulicke Browne is not going to leave the Presidency Division permanently. His health failing, he wanted to go to the hills and hence this arrangement to suit the convenience of His Losdship. He will come back by November next. Dospite all the failings of Lord Ulicke Browne, his administration of the three or four most advanced districts in India gave universal satisfaction, and we are sure that his absence though temporary, will be keenly felt by all classes of the people.

It has given us intense satisfaction to learn that progressive Bromhoism is gradually assuming a new phase. The Bramhos were so long considered as out-castes and renegades, and we must say that the Hindoos had just grounds for thinking them so. They repudiated Hinduism and scorned to call themselves Hindoos They neglected the teachings of their own Saints and followed those of the Bible and the consequence was that while the Hindoos repudiated them, the Christians sympathised with their movements. So long they never sought the sympathy of the Hindoos and gloried in their severence from them, but now they are trying to revive the Hindu spirit of the Bramho Somaj. We sincerely wish them God speed.

----On Friday the 25th February, a deputation of the Indian League consisting of both the houses of the Sovabazar family, the Dattas of Nimtollah and Hatkholla, the Raja of Jessore, the leading merchants of Hatkholla, Puthuriaghatta and Barrabazar, some of the Mullicks of Burrabazar and Jorrasanko, Mittras of Simlah, Dosses of Kapalitollah, Ghoses of Puthuriaghatta, the representatives of the late P. C. Tagore, Maharani Surnamoye Rajah Badya Nath and others thirty-eight in all belonging to the highest families in Calcutta waited on His Honor the Lieutenant-Governor at Belvedere on the subject of the Municipal Bill. His Honor received the deputation courteously, shaking hands with each and every one, and asked them to proceed to business. An address was then read by the Chairman of the League.

Some conversation took place, in the course of which the Chairman recognizing the primary duty of Government, and consequently, the necessity of some power of control on its part, submitted that the controlling sections as they stood, contained words calculated to cause alarm. If the section had been obviously framed, only to restrain the Commissioners from unduly reducing taxation by the stoppage of drainage, and other sanitary works to the detriment of public health, there could not have been much alarm; but since compulsory increase of taxation seemed to be threatened on indefinite complaints from parties also un efined, and after an inquiry which might be exparte, or in a corner, the Calcutta community has been much agitated and Lalarmed. The deputation expressed its full confidence in His Honor the Lieutenant Governor, and believed that, even if the bill passed as it was, still it could not during his tenure of office, be allowed to become the means of any inconvenience, since he must feel a paternal interest in the representative principle inaugurated by himself for introducing self-gavernment among the people, But another king might arise who knew not Joseph.

His Honor closely argued the matter with the deputation, and at last admitted that theire was sufficient cause for the people to take alarm. He said he was convinced that the Sections 22 and 58 are really threstening, though the Government never intended to carry the threat into effect. The sections ought to be considerably modified, and he would propose to create something like a court of inquiry, to which the power at present proposed to be conferred on Government by the above-named sections might be transferred. The deputation unanimously expressed their satisfaction at this concession.

Baboo Kally Mohun Dass then eloquently urged titute the nomination of one fourth of the total number of the Commissioners by the Government would be quite sufficient for supplementing any possible deficiency in the elections. His Honor promised to give his best consideration to the subject, and the party returned from Belvedere with many assurances of satisfaction.

THE PAGRESS OF DESPOTISM. - The bond is being gradually tightened, and we see it, feel it without the power of extricating ourselves from it. While the British Government is emancipating slaves in distant regions, fighting for them, spendling money and sending out Embassies, here in India the peaceful subjects of Her Majesty are gradually being deprived of the vestige of liberty that they possessed. Generous England moves at the call of African unfortunates, but the piteous cries, of her subjects in India moves her not. The good old days are all over and the late Lord Mayo

inaugurated a new system of governing India which is spreading discontent like wild fire. India is no longer to be governed by law but by individuals. The people of India are no longer to be trusted as the fellow subjects of Englishmen or treated as free citizens of a constitutional Government, but as a lot of unruly mob to be kept down under the rod. As time advances, and the world progresses, India's fate is not to join in the general march, time only brings upon her additional festers, and at each step she drags a heavier chain.

It was during Lord Mayo's reign that the gagging Act was passed, which gave an unmistakable proof that England was merely a conqueror and India a mere subject; that their relation-hip with one another was not of affection, sympathy and love but of distrust and chmity. The Government distrusts the people. and need we say that the inevitable effect is that the people distrust the Government in return? Confidence begets confidence and distrust distrust. That Act pointed out, as if m ckingly, that though Government talks big of liberality, of cofidence &c., &c., yet in fact it had not the slightest faith upon the loyalty of the people. They forget that it was the people of India who saved them during the dark days of the Sepoy War, and if the Government goes on distrusting them at this rate at every step, the people may not be found so willing to make a common cause with them, should any future contingency occur which however Heaven forbid! It was Lord Mayo's policy which spread discontent amongst a p ople who were as much content under the British rule as if they were under their own sovereigns.

The new Criminal Procedure Code was then introduced and it was like throwing a bombshell amidsta vast assemblage. There was alarm and consternation in every face and the discontent was raised to the highest pitch. That Code did away altogether with the liberty of individuals and the reign of law By that Code the Magistrates were created despots and placed in charge of every district or the subdivisions of every district. One despot in the India House is quite enough for the peaceful inhabitants of India, but three thousand despotlings were thus let loose upon society. The trial by jury was abolished; the Magistrates were entrusted with powers of punishing any man and under any circumstances; the appellate courts were empowered to enhance the sentence of the lower court-a novelty in the annals of criminal administration! All these were done not during or af er the suppression of a mutiny; but when there was peace throughout the length and breadth of the land and no distant prospect of its being disturbed. All these were done not to crush the spirit of a fierce, rebellious, and irrepressible people; but a gentle and unoffending race was thus suddealy, without any provocation whatever, brought un ler the lashes of a draconian law!

Lord Northbrook's arrival was like a gentle shower during the hot days of May. It soothed the people, and raised their drooping spirits and the good Lord Northbrook was looked upon as a messiah, who came to India to deliver the people from their bondage. But though a geneous and good ruler he could not be moved to take pity upon the over-governed people of India. He repaired many a wrong done to us by his predecessors and subordinates, but the greatest he did not touch. There he was immovable. He has sacrificed himself on many occasi as for the good of the people he came to govern. He was the means of ridding Bengal of a Governor like Sir George Campbell; he was the first Governor who was for reducing taxes and did not impose a new one; he is the only Governor who dared to d-fy Manchester and the consequence is that has been forced to resign. All these he did for India, but the system introduced by Lord Mayo was yet not only in full force during his reign but he himself is trying to develp and strengthen

Sometime ago we alluled to the endeavors of the Government to undermine the powers of the High Courts in India. These High Courts have hitherto proved the only trusty friends of the people under a despotic sway. The High Courts have hitherto protected the people from despotic power and a vigorous executive, but the Indian Leagislation Act purposes to raise the Viceroy above all Laws and Courts. We have here then despot No. 2, a despot who is more powerful than the Czar of all Russias and at least as irresponsible as the Sultan of Room. Then it was proposed to introduce the New Criminal Procedure Code in the Presidency Towns. As if it was not enough to overawe the 200 millions beyond walls of the chief Towns of India, but the inhabitants of the Town must also taste what the administration of despots is like. Mr. Hope has introduced the Presidency Magistrate's Bill the object of which is the name—to govern the chief cities as vigorously as moffasil is governed. The police has been made independent of the Magistra es, and thus virtually every paharawalla is to become a despot. There is a link which ties the Police myrmidons from the top to the bottom. They are a band who act in concert and to seek any aid from the police for the oppressions of one of its body is simply labor lost. This independent police headed by the Commissioner alone is a dreary thought, may Heaven protect the peop'e of the City from

away with. The Magistrates who now enjoy the power of summarily sentencing any man to six months' inprisonment will be empowered to extend the sentence to double the period. It is in fact the dreaded Criminal Procedure Code introduced in the Cities.

The next more of Lord Northbrook is to suppress objectionable theatrical performances by force. The following is the Ukuse promulgated day before yesterday.

1. Whenever the Lieutenant-Governor of Bengal is of opinion that any play, pantomime, or other drama, performed or about to be performed, is—

(a) of a scandalous or defamatory nature, or (b) likely to excite feelings of disaffection to the Governmen, established by law in British India, or (c) likely to deprave and corrupt persons present at such performance, or (d) otherwise prejudicial to the interests of the public, the said Lieutenant-Governor, or such officer as he may generally or specially empower in this behalf, may by order prohibit such performance.

2. A copy of any such order may be served on any person about to take part in the performance so prohibited, or on the owner or occupier of any house, room, or place in which such performance if intended to take place, and any person on whom such copy is served, and who does, or willingly permits, any act in disobedience to such order, shall be punishable, on conviction before a Magistrate, with imprisonment for a term which may extend to three months, or with fine, or with both.

3. Any such order may be notified by proclamation, and a written or printed notice thereof may be stuck up at any place or places adapted for giving information of the order, to the persons intending to take part in the performance so prohibited.

4. Whoever, after the notification of any such order_ (a) takes part in the performance prohibited thereby, or in any performance substantially the same as the performance so prohibited, or (b) in any manner assists in conducting any such performance, or (c) is present as a spectator during the whole or any part of any such performance, or (1) being the owner or occupier, or having the use of any house, room, or place, opens, keeps, or uses the same for any such performance, or permits the same to be opened, kept, or used for any such performance, shall be punishable, on conviction before a Magistrate, with imprisonment for a term which may extend to three months, or with fine, or with both.

5. If any Magistrate has reason to believe that any house, room, or place is used, or is about to be used, for any performance prohibited under this Act, he may, by his warrant, authorize any officer of police to enter, with such assistance as may be requisite, by night or by day, and by force, if necessary, any such house, room or place, and to take into custody all persons whom he finds therein, and to seize all scenery, dresses, and other articles found therein, and reasonably suspected to have been used, or to be intended to be used, for the purpose of such performance.

The story is soon told. The National Theatrical Company entertained crowded houses with the farce of Gajadananda and the Prince. A cry was raised by the friends of Babu Jagadananda that the piece was obscene and disloyal. We did not see it before but we have since seen it and consider it only a harmless piece enough. However painful it may be to the feelings of Babu Jagadanania and his friends to be thus caricatured in the public, the farce was neither disloyal nor obscene. As regards disloyalty, the managers of the Theatre had so little idea of offending His Royal Highness that in the piece his name was not changed, though Babu Jagadananda's was changed into Gajadananda. But whether it was objectionable or not, neither we nor the Englishman, are the best judges. That Lord Northbrook should so far forget his dignity as to promulgate at orce an ordinance, empowering the local Government with summary nowers, at the instance of a newspaper paragraph. is so strange, incredible and unlike his Lordship himself, that we are literally taken aback and do not know what to think. Let all objectionable plays be suppressed, but who is to judge whether the plays are objectionable or not? Why should the powers, which Courts of Justices at present possess to the good of the community, should be suddenly transferred into the hands of individuals? Are not our Courts of Justices sufficiently competent to try such cases and are not our laws sufficiently stringent and deterrent in their nature? But those old days of laws are gone and as we said the bonds are being slowly and surely tightened. The hookum of the huzoor is to be our law, what more do we deserve?

We have thus taken a rapid and therefore imperfect view of the progress of despotism in this country. In the name of all thing that is sacred that progress must be arrested. We are confident that it can be arrested by some efforts. That effort has not been made. But the Government is paving the way for the successful carrying out of an unanimous and united effort. So long the citizens of Presidency Towns had no interest whatever in taking into their consideration the criminal administration of the country. Now they are going to be equally sacrificed and there must be an unanimous protest to be laid before the Parliament. We must have memorials signed by millions and have them submitted by delegates. It may take six months to complete all the arrangements but a grand effort must be made and all the leading men of the Empire requested to join in this good cause.

THE CALCUTTA MUNICIPALITY. -In a fit of rage the mask has been thrown away. And the socalled representatives stand before the public in their true colours. It is no longer an improvement of the Bill that is sought, it is its abandonment altogether. The Englishman urges, courses, threatens and bullies Sir Richard Temple to withdraw the Bill at once. That is what they feelly want, that is what they wanted all along though they dared not

manding an improvement in the bill has its disadvantages. Who knows that Sir Richard may take them at their word and thus crush them with their own weapon? They foresaw the danger, for the Lieutenant Governor without passing the bill, as he said he would, referred the sections, which were particularly condemned, to the Select Committee. His Honor further said that those sections admitted of a great deal of improvement. This is sufficiently alarming and like wise folks they feel that they are on a dangerous ground. They dare not again ask for improvement and amendment, they now demand the with lraw of the Bill altogether! It was in the month of October when the League demanded an elective system the Englishman said: "Though under existing conditions, we do not believe that a purely elective system of Municipal Government in Calcutta would be either desirable or practicable, we have no doubt that the time has come for a partial recognition of the principle." Thus a complete system was neither desirable nor practicable only few months ago, last week the same paper would have nothing but the complete system, but now the abandonment of the Bill.

So says also the Hindoo Patriot. He says "We hate half-measures." These set phrases may do well to delude a stupid public, but it would be painful to think that they would in this City. He hates half measures, so do we when there is a chance of getting a full one; but are not half-measures better than no measures? What is a full measure then? To our thinking the only full measure hat we can conceive of is the establishment of a sound republican form of Government in India. We are a subject race, under the control of a despotic Government. All our measures therefore must necessarily be half so long we do not found a Government of our own. The admission of natives in the Civil Service, for which our contemporary is so very anxious, is also a half measure, for we see no reason why Englishmen and Scotchmen should hold any service at all in our country. To hate half-measures is to stand still. Indeed for whatever measures our. contemporary has advocated and will advocate in future must necessarily half-measures and the only full measure that we can conceive of is what we have said above. To say therefore that he hates half-measures is simply to talk nonsense.

What the Hindoo Patriot really wants can be learnt from the following passage: "The evidence which we hope will be laid by the delegates of public bodies and Counsel of the Justices, on Saturday next, may yet satisfy him that the present Bill will not meet the reasonable wishes and aspirations of the Calcutta community, and that the best thing he can do under the circumstances is to abandon it altogether." The italics are ours. So the prayer was not, since the present Bill would not meet the reasonable wishes of the people, to improve it, amend it and make it more acceptable, but to abandon it altogether. There you see, amidst all their virtuous indignation against shams, and delusions, the real cause of alarm is gradually oozing out. It is the elective system, it is the elective system that is at fault and not sections 22 and 58. So the hon'ble Kristodas Pal, when last Saturday the bill was referred to the Select Committee, pathetically enquired "whether the Select would consider the necessity of an elective system." His Honor said: "most certainly not" and his rising hope was nipped in the bud.

The real point at issue then is whether there will be selection or election. For election every native of India is, excepting those who are already Justices; and for selection all the Justices and the Anglo-Indians who clearly see danger to the power they already possess. So there is a holy alliance between the two, and the Hindoo Patriot declares that the Bill "has proved a fresh bond of union between the Europeans and natives." By "natives" of course native Justices must be understood. For any political identity of interests between the people and the Europeans is simply impossible. The English papers are indignant and so is the organ of the British Indian Association and all speak in the name of the rate-payers! It is also alleged by the latter that Sir Stuart Hogg "has no intention to work under the new system and will go home if the Bill passes." If this be a fact, it does not prove that the new system is opposed to the interests of the rate payers, but only dangerous to despotic power. If Sir Stuart Hogg feels that his happy days will be over when the Bill shall come into force, the rate-payers must feel that the sooner the Bill is passed it is better for them.

Our own position regarding this bill is a painful one, painful on account of the vast responsibility that has been thrown upon our shoulders. The English Dailies generally lead the people of Calcutta and when they can manage cleverly they almost invariably succeed to carry their point. But we are obliged, almost single-handed, to oppose that baneful influence. The elective system is a boon for which we have long prayed to Heaven. When Sir George Campbell granted it we cordially supported him. We have always tried with the best of our poor ability to induce Moffusil Towns people to pray for the privilege and in many instances we succeeded. But an elective system in Calcutta is altogether a grand affair. Now that the Government is pledged to modify the objectionable sections we

in any shape whatever. In Calcutta an elective system means the virtual transfer of the control of the city into the hands of the people. We may not get it at once, but if we but get a partial hold now, we shall see whether the Government does not eventually find itself compelled to part with it altogether. The great point is to make the Government concede the principle. That has been the dream of many a patriot and that dream is being realized. What would a man feel under the curcumstances, if he sees, that this great boon shoul be rejected by his countrymen at the instigation of a party inimical to their interests.?

The sections which created alarm have been taken up by the Lieutenaut Governor for reconsideration. An influential Deputation of the Indian League waited upon His Honor and Sir Richard Temple admitted that those sections ought to be modified. But he was not willing to transfer the control into the hands of the High Court though he was quite willing to provide so that the government may not exercise arbitrary power. He proposed to constitute a new court composed of three Commissioners, and to which the power of control is to be transferred. One of these Commissioners must be a nominee of the rate-payers. But all these matters will be finally settled next Saturday when the Legislative Chamber will present a brilliant and unusual spectacle. The British Indians, the Justices and the Indian League will send delegates and Counsel on behalf of their respective constituents and possibly deliver grand speeches. But the elective system is safe, for the Select Committee will have no power to consider it, though the hon'ble Krishtodas Pal wanted permission to open the question anew. So there will be very little jarring of interests and we are glad thus to have another exemplication of the truth that Providence brings good out of evil. The Counsel of the Justices will be thus compelled to advecate the cause of the rate-payers.

AND PATRITISM :- That PARTY SPIRIT Hindoo Patriot cannot do any mischief to his country is not from any want of inclination on his part. Possessing a certain amount of influence in the country, he has not been exercising it to the furtherence of the good of his country. He left poor Mulhar Rao to die the death of a felon, because it was Lord Northbrook who persecuted him. But that is an old tale and we do not choose to rake up old matters. When the Indian League was established, our brother ignored its existence altogether; but when that became impossible, he turned round to exercise that influence what he possessed to crush it down. What a body politic like the Indian League was a crying want in the country every one will admit. That it represented at least a certain section of the community which was hitherto unrepresented, that it has given a new political impetus to the people and increased the power of the nation, we think, even the Hindoo Patriot in his sober moments. will not deny. What was his duty then, as a professed patriot, towards this new movement? If a patriot, it is his duty to cherish and support it, to rejoice that his fellow countrymen are gradually throwing off their usual lethargy and struggling to assert their rights and trying to form themselves into a nation. But what has been the attitude of the Hindoo Patriot all along? He does not see the League in that light, he views it as a hydra-headed enemy which has destroyed his influence with the Government. He is sorry that the League ever came into existence; the strength that the League is daily gaining oppresses him; he is not glad that his countrymen are gaining strength, he is sorry that he is losing his influence; the activity of his own countrymen gladdens him not but pierces his heart, and he is at present labouring under a strange mental aberretion. Long ago he threw away the best policy which directed his steps and he is now in a maze; uncertain which course to follow, unsteady in his counsels, faltering in his steps, incoherent in argument and altogether a helpless man at the mercy of his passions, whims, and caprices. At one time he abuses Sir Richard Temple and at the next moment falls at his feet to cry for mercy. He does not know which side to take and what policy to adopt. He cannot forsake the Government, which, he thinks has forsaken him, after having liberally bestowed so many eulogiums upon Sir Richard and Lord North brook, for the people may laugh at him; neither can he take up the cause of the people who may not again trust him. But in the midst of all his agony he has never forgotten that the cause of all his troubles is the new political Association—the hope of his country. Though uncertain whether to abuse or praise Sir Richard, he has no faltering in the case of the League. He ferrets out passages containing reflection against the League from superanuated vernacular papers to insert the translation in his columns to bring discredit upon the body. He descends to personalities. He calls the Rev. K. M. Banerjea, who responded to the call of his countrymen, at his advanced age from the highest patriotism, a "h-ary-headed political padree.".

We said he talks incoherently, now note this passage which we take from the columns of our contemporary. "Some misgivings [regarding Dresarker's Science Association] were however en-

gen lered when His Monor presided at a meeting [of the Indian League] for the establishment of a Science College as it was called, held at the same theatre house where the Prince has been caricatured." Now is the College to be condemned because its promoters held their meeting for its establishment at a place, where a theatrical company, two months after, brought before the public, the farce of Gazadananda, in which the Prince was made to play the part of a Hero? Or Sir Richard Temple to be blamed for presiding over a meeting held at a place where subsequently the Prince was caricatured as our contemp rary puts it? The thing is, in his blind rage and eagerness to find fault with the Leaguers he exclaims in this wise "Ye Leaguers, your college is very disreputable. The place at which you held your meeting was subsequently polluted by a theatrical company, so your college is disreputable." or "ye Sir Richard, you are disloyal at heart or else why did you preside over a meeting held at a place which was subsequently polluted?" But these ravings are harmless enough, it is when he exercises the influence that he possesses to oppose the establishment of the Industrial College that we naturally feel indignant. A great deal of the funds raised by Dr. Sarkar is under the immediate control of the Leaguers, indeed great many Leaguers themselves are donors; and though there may be, which we doubt, a difference of opinion amongst the Leaguers as to the utility and practibility of Dr Sarkar's scheme, there is but one opinion in the country on one point. It is universally admitted that the Industrial College is a greater necessity by far than the Science Association. Indeed the one is a necessity and the other a luxury. But yet the Leaguers scorn to oppose a movement set on foot for the avowed object of furthering progress And we can assure our contemporary that the Leaguers, if they resolve and stoop to do it, can demolish the edifice raised by Dr. Sarkar and his party within twentyfour hours. Our brother will feel that it is not a mere boast; that when the Leaguers say it they can also > accomplish it. But as we said the Leaguers scorn to do it. Our contemporary has however another sort of patriotism to guide him. The Industrial College is the greatest want of the country and is felt as such universally. If through God'is mercy the Leaguers can successfully carry out their object, it will at once change the face of the country and bring about a revolution which will raise India as one of the most important of countries. That the project of the college has already powerfully moved the whole country is evident from the inquiries made regarding it from all parts of the country. Zemindars, merchants, and thousands of middle classes have expressed their impatience at the slow progress of the Institution, and letters from men of highest respectability have been received expressing their desire to send their children and relations to the College. We shall here insert one letter which we received from Bombay yesterday. Respected Sir,

Respected Sir,
We the undersigned, beg to offer ourselves as candidates
for admission into the Albert Temple of Science.
We hope you will also kindly take the trouble of sending
us a complete prospectus of the College and also let us

You will also let us know whether the instruction in the Vernacular division is to be conducted through the medium of Hindoostani or Bengalee. We may add that if the instruction in this division be given by means of the Hindustani language many from this part of the country will be able to join the Temple.

We beg to remain
Respected Sir
Your most obt. Servants
K. I. Desai, B. A.
Elphinstone College
Bombay,
R. S. R n . F. C. E.
Civil Engineering College.

Regarding the subscribers of the Industrial College our brother thus delivers himself. "Nothing has transpired as to the other subscriptions, that is to say, as to who the subscribers are, what they have subscribed, at whose instance or for what object. Such being the case the native public were taken by surprise at the move of the Lieutenant Governor and the noise made about the other Association. Is the money really forthcoming and has it been really obtained through the instrumentality of its promoters? If the other subscriptions, supposing that they are really forth-coming: have been obtained like Rai Luchmipat by and through the Government, why should not the Gran vernment act independently of any clique or why should it not strengthen the funds of the only institution, which has been recognized by the public?" Leaving aside the malignant insinuations in the above passages we come to one vital point. Our brother recommends the Government to make over the sum to Dr. Sarkar's Association or to do whatever it likes with the amount, but never to give it to the Leagures that they may not estudish the College. Let the college and the country. go to-but let the Leagures be humbled. Is this your view too, Raja Joteendra Mohan and Babu Digambar and Babu Rajendralala-you whom the country so deservedly respects We always pray for the forgiveness of the sins of India; but where is the hope when fresh ones are committed by those from whom the country expected as much? The Hind o Patriot wuld be glad to see the College, calculated o benefit

the country so vastly, 'e nolished that he may have the satisfaction of seeing the Leaguers humbled!

SCRAPS AND COMMENTS.

The Pioneer thus speaks of the Indore Cotton Mills :-

The one steam cotton-mill in Central India, the early difficulties of which many of our readers must remember, seems to have now attained substantial success. It has been at work nearly four years, and the calico-clothed multitude, having had time to wear the cloth, dashing it in stony brooks meanwhile, as much as they like, are now satisfied that it will do. H. H. Holkar, the manufacturer, never had any trouble in competing with Horrocks, or any other of the oppressed Lancashire men, whose well-sized "low counts" were never approved of in Central India. It was first with the domestic weavers, but much more with the Bombay mills, that the Indore cloth had to compete. The former had to a great extent been displaced by the latter, and these again appear likely to be pushed out by the successful efforts and honest work of Horlkar's manager, a Mr. Browne, who havig had to struggle through all the diffculties which beset the enterprise during is birth and infancy, has a right to rejoice in the success now attaind. We speak of the honest work which the Indore piece-goods are sail to prove, though trusting that none of the Bombay mills stoop to blend with their vegetable fabrics an undue quantity of mineral substances. Even if such practices once obtained in the rising mills of Bombay island, let us believe that the patri otic Millowners' Association have changed all that. Certain it is, at all events, that the substantial character of the cloth turned out by the Indore mills has secured a preference for it in Central India, and not only there, but in some parts of Rajpootana and these provinces. The manger can readily produce varn and cloth up to the designation of "30s."; but it is more profitable to work from 20 to 24s. The unmber of spindles is about 10,000; the looms are more numerous in proportin than in the Bombay mills, as those at Indore turn out the bulk of their work in finished cloth, and do not much affect the trade in yarns. The work people earn from four or five up to ten and twelve rupees per month, the average being about seven or eight, which is a very attractive rate for the labor market of Central India. The "han Is" are scarcely vet up to the mark, the women not having been found so serviceable as in the Bombay mills; but as they are paid mostly by piecework, their industrial education is proceeding. The mill chimney, 120 feet high, is a noble piece of masonry and brick-work. It may well serve as a monument of the princely proprietor, but still more appropriately of the skill, perseverance, and Jugment of the engineer and manager, the aforesaid Mr. Browne.

The London correspondent of the Friend of Idnia writes in connection with the manner in which

this country is governed :--

We govern India very badly; and this badness, of course, Lord Lytton will be unable to improve; but we intensify the evil effects of legislative mistakes, by perpetually accelerating the feelings of the people, not in order to get anything, but from sheer unimaginative stupidity. Have you ever seen a dog-dogs in a former state of existence must, I think, have been naturalists-watching with intense interest, the progress of a beetle or any other insect through the grass? If so, you will have observed that should the beetle halt, the dog will seek to accelerate his progress with a blow of his paw. He has no evil intentions in so doing; his object is merely to give the beetle a little gentle encouragement; but the result is that he crushes the beetle dead. It was a want of imagination on his part, he had not calculated the weight of his paw. Just so is it with eis in India. From sheer want of imagination our political agents, our senior civilians, bitterly insult when they want to encourage; and slap in the face when they imagine they are cheerily patting a man on the back. Witness, for example, the singular method of marking the Prince of Wales' progress, by knighting all the Police Commissioners on his route. Nothing but the utter Philistinism of an able Indian Administrator, could have risen to such a height of stupidity as this. Witness, too, the recent correspondence with Sir Salar Jung. The power to enter into other people's feelings-to place ourself in their perception-that genial and gentle courtesy which would never be more marked than when dealing with the Princes of India, precisely because they are subject princes -all this demands a degree of imagination which is not to be had in India-which is inseparable from high literary culture (though of course a man may have much literary knowledge without having also the imagination I speak of). And this I hope and think is what Lord Lytton will brignwith him to India."

There has been an unusual increase of registrations in Bengal during the last year. The Admistration Report on the Registration Department says :--

The registrations, then, for the year under report come to 423,873, against a total of 328,369 for the previous year. This would represent an increase of 95,504. If, however, the registrations for Assam, 5,988 in number, be deducted from the statement for 1873-74, there will result for the Lower Provinces, as now constituted, the extraordinary net increase of 101,492 registrations during the year 1874-75; in other words, an increase of 314 per cent., as against an sincrease of 1766 per cent. reported in the previous year

Regarding the increase of Registrations the

Inspector General says :-

It will be seen from the table contained in the preceding paragraph, that Jessore has far out tript all other districts in the progressive development of registration, the numbers having gone up from 23,864 in 1873-74 to 50,573 in the year une report, representing for one district alone, and for one year only, an increase of 26,709 registrations: a resulti I believe, uuparalleled in the history of this department The District Registrar, Mr. Smith, observes : _ "This large increase of more than the entire number of registrations, of the former year was owing to execution of bonds for loans of rice and money caused by the high price of foodgrains, principally in the subdivision of Jhenidah and its vicinity the opening of rural registry offices, and the gradus expansion of registration." There was an increase of 16,40 bonds during the year, and, on the other hand. of 8,43 leases. As registrations under the heading of bonds 02 not, even down to the present time, shew any did of abatement, I am disposed to think that while scarcity chienot doubt exercise some influence on the increase, the the fagents in that direction were the rural offices. I am the more inclined to this conclusion in considering that at the opening of the year there was but one rural office within in tdistrict, and that lay as far south as Morrellganj; while crehe course of the year as many as ten such offices were hilated. It fact down to the present time registration is As ding its own under all headings in the Jessore district. regards other districts, I find, generally, that registrations

have increased most where the rural system has been most largely extended."

On the subject of the registration of marriages and divorces we have the following :-

The number of marriage settlements (kabinnamahs) and deeds of divorce (talagnamas) registered last year came to 2,591 and 834 respectively, against 1,955 and 135 for the preceeding year. The increase under the heading of deeds of divorce is attributed to a reduction in the stamp duty payable thereon. Now, however, that the stamp duty on such instruments has been altogether done away with under the orders of Government, it is probable that registrations under this heading will largely increase. The number of divorces registered bears but small proportion, it would appear, to those actually effected, which are for the most part brought about by a verbal, and not a written arrangment. The increase under the heading of marriage settlements would afford an additional proof, if one were needed, of the increasing sense of security inspired by registration. Both the above classes of instruments are now, as heretofore, chiefly confined to the eastern districts, where the Mussulman element most preponderates."

The Journal of the National Indian Association contains the following which may be profitably read by those young Indians who imitate English habits

and customs:--"Indians, if they desire to teach conceited Englishmen that they have a mind of their own, and that they disdain to be dictated to, must resolutely retain everything native to them whenever it has its justification in climate and circumstances, and never imitate English customs from the mere sake of imitating, which becomes a degrading flattery. It is known that in New Zealand the natives who lay aside their mat and wear an English coat, are apt to induce disease, and die of consumption; like them, many simple Africans are apt to imitate our dress, as if it raised them in rank. If in India, where the English dress is ordinarily oppressive and unsuitable, any natives adopt it, this will not conduce to their permannent welfare. More especially is it important to warn any of them who are weaker, against the peculiar and pernicious absurdity of the principle called fashion, which implies that the forms or colours of dress are to change from year to year, under the dictation either of lords chamberlain or of milliners, or else of some haughty and rich ladies, who try to distinguish themselves by displaying always some novelty. From early times, it would seem the countries, which we call the East, especially Persia and India, had attained an exquisite cultivation of taste, and had fashioned furniture and vessels and human apparel into many graceful forms. Eech part of dress had its varieties. Hats and head dresses for man or woman existed, in various shapes; robes and shawls were worn in ways suitable to each sort of work and to every circumstance. A definite number of fashions, though hard to count, existed out of which each person might choose, and did choose, at will. This is the only reasonable and advantageous state of things. It avoids all our absurdities and evils. Here we have to learn wisdom from India. If they imitate us, they degrade themselves. Fushion with us implies that all are to dress alike, which ensures that many or most shall be unhandsome, perhaps ugly; for to different human forms, ages, or complexions, -a different dress is most becoming. In selecting for himself or herself the appropriate dress, the taste of the individual is cultivated, and a superior general grace arises in the entire nation. Englishmen have observed to us that if a shapeless piece of cloth be given to a Hindu woman, she will put it on in half-a-dozen ways, every one of them becoming; (or perhaps it was meant that different Hindu women have different ways, each becoming to the wearer.) In European Courts the lord chamberlain has been used to dictate how the visitors shall be dressed; thus sometimes in the stupid desire "to encourage trade," or oftener from mere caprice of power, changes have been enforced which cause pernicious expenditure. A splendid dress, which was admired last year, is this year called out of fashion, and forsooth! must not be worn again at Court. In Paris under the late Imperial rule this mischief was carried to a deadly excess; but even where it is less extreme, it is essentially evil, and belongs to the vulgarest mind. It has no purpose but to display wealth, by quickly discarding dress after dress; thus it entices the less wealthy into ruinous expense. How much more worthy of a wise nation is the system which treats a splendid vest like a crown jewel, to which age can never be named as any objection. If indeed it be visibly faded, that is to the purpose; but while its beauty lasts like that of a ruby or garnet, what matters if it belonged to one's grand-parent? And not to speak of court apparel, but of more homely raiment, if our persons change physically, as by age, some change in the form of dress may be suitable; but to change because it is a new year, is ridiculous. With us in England it is hard (except in especial London shops) even to get a hat of the same shape year after year; when one shows the hat of two years ago the reply is, "We cannot supply it, it is no longer the fashion !" and our silly boys rudely hoot one for wearing what was universal ten years before. We understand that the conservative part of the Parsens are peculiarly jealous of English customs, because of the baneful expense into which this absurdity of "fashion "leads their young people. At the same time it is so far from being beneficial to trade. that it rapidly depreciates goods, which must be sold at once or become unsaleable, beccuse "unfashionable.

The Dutch have made further progress at Acheen

Proper, without encountering any serious resistance. The conquest of the VI mukims has been followed by the submission of the headmen of the adjacent IV mukims, who have accepted the terms offered them by the Dutch. It appears probable that other chiefs will soon follow the example of those of the IV mukims. There are evident signs, says a Straits paper, that the bulk of the population of Acheen Proper are tired of the war, and wish their chiefs to conclude peace, yet fearing the anger of the more warlike disposed headmen, they dare not, as yet, oppose the will of their leaders. The Dutch troops have now advanced to Korung-Raba, the first place of importance on the West coast about 8 miles from Kotta-Rajah, the head quarters. On the night of the 23rd January, the Achinese attacked Lemboe East, one of the Dutch outer forts, lying North-East of Kotta-Rajah. They were speedily repulsed with loss, but succeeded in killing four of the occupants. Lemboe East is situated opposite a district where the most determined Achinese fighting men have taken up their quarters."

In regard to the expedition to Perak, fighting would seem to be nearly at an end. It appears from the Straits imes that there are three courses open for Government to adopt :-

"One is to retire altogether, and leave the Chiefs and Chinamen to fight it out amongst themselves; when we should probably have to go back, and do over again what was done in January 1874. The second course is to annex the country. The third is to proceed with the policy riverseverted and alminister the office of the coun

try in the Sultan Abdoolah's name, through a Council o British Residents or Commissioners and the Principal malay chiefs. The position is a very embarrassing one. If annexation can possibly be avoided, it should be. Meanwhile we find a contemporary writing :-- "We venture to surgest that in case of delicacy interfering with doing now what in a little while is certain to be done, the poor Whites of India should be allowed to annex it, and hold it in trust for Government until they shall have made it a wealthy and prosperous country!" Another writer porposes to annex the Peninsula and make the traders of Singapore and Penang support the burden of taxation that would be the result! Menwhile we are sorry to read that disease is committing ravages among our forces. Two officers, Sub-Lieutenant G. H. Cuippendale and Lietuenant A. E. Ommaney have been invalided. Lieutenant T. F. C. Armstrong and several men of the Buffa have died of dysentery. The following is issued in a Penang Gazette Extra of the 17th January: On the morning of the 14th a party consisting of Madras Sappers and some of the Goorkhas, under the command of Lieutenant Hare, were attacked while cutting a road from Qualla Kangsor, by the inhabitants of Kora Lama. A detachment of 30 of the Buffs under Adjutant Colvill was sent up from Qualla Kangsa as soon as the movement on the part of the enemy was noticed to check it, and just had time to get into position when a volly was fired upon them. The Malays continued firing from under oover of the bush but without effect. Our men returned the fire, and judging from the yells of the enemy, with some effect, and the Malays eventually retreated with their dead and wounded. In the meantime an attack was made on a working party which was cutting wood for the stockade at Qualla Kangsor. A soldier of the Buffs (Short) was wounded in the leg at the onset; the party retreated to the camp as soon as it could those carrying the wounded man being fired upon continually. Those in the stockade, however, formed and lined it, while Captain Gay brought a gun to bear on the enemy and shelled them out of the jungle. Another party of Malays managed to come down the river and attacked adjutant Colvill's detachment, but the naval brigade shelled them off also. The men who originally attacked Lieutenant Hare's party next returned up, and fired into the friendly village of Qualla Sungie, situated opposite to Qulla Kangsor, and throwing down their muskets had a regular hand-to-hand encounter with Raja Usuff's men. The firing from our stockade, however, beat them off. The result of the morning's fighting was two wounded on our side."

The Malays appear to have fought with determination and to have chosen a day when a number of officers with a strong escort were away at Kampong Boyah on Court-Martid duty.

We take the following from a Bombay contem-

porary: "The interest in the performances of the Davenpor Brothers continues, but it has somewhat abated since th first seance at the Town Hall. On Friday night, at the Framjee Cowasjee Institute, an amusing incident occurr owing to some astate Parsee having brought with him very nice clean Parsee's coat, wrapped us as the dhobie had returned it to the owner, and which was presented at the time of the coat performance for Mr. Fay to put on after he had got rid of his own in the usual way. The Parsee evidently thought he had extinguished Mr. Fay and the Davenport Brothers as well by this unexpected request to put on a Paasee's coat. The long sleeves were torn to the ordinary length of a coat sleeve, that white coat was placed on the table, the lights were extinguished, and when relighted Mr. Fay was wearing the Parsee's coat, and, moreover, he was actually sitting on the tail of it as could painly be seen. Immence applause and excitement succeeded this proceeding. The coat was so tight on Mr. Fay's arms that considerble effort was needful to get it off. We could imagine that the sounds as if the instruments were being played were produced by vintriloquism, but how musical instruments and handbells are kept in motion without hands is in explicable, and as they will only act in this way in the dark

The London correspondent of the Uucovenanted Service Gazette states that some months past London tardesmen and especially jewellers have been exposed to a system of robbery as simple as it is

cat's eyes are requiste to see how the thing is done."

effectual :-"An old gentleman, with a grey beard enters a shop and asks to see a tray of jewellery to select a birthday gift for his wife. Pretending to examine the articles very closely, he watches his opportunity and makes off with the contents of the tray. The unfortunate shopman, finding too late that he has been betrayed, immediately rushes after the ingenious miscreant, but can find no one near except a young and levely female who is admiring the articles in the shop window. As for the old gentleman no one had seen him. The trick was repeated several times under various disguises, and the police was completely baffled. It was, however, reserved, for a merchant in the city to solve the mystery. Returning home unexpectedly one evening, he found his door open and the lock fractured. Walking on tiptoe, he sought the agents of police, who, after closing the street-door succeeded after a short search, in catching a young man in the very act of forcing open a desk. He managed to escape, but the agents pressing after saw him disappear into a room in the same house. They forced the door, but on entering discovered no one but a paralyzed old man who feebly demanded why they had made so violent an entry. The police were nearly paralyzed themselves, and happily, on raising up the afflicted creature to make a further examination, they found a string round his body. They pulled it when crack! the paralytic was discovered dressed saa soldier: and thus the artful dodge was detected."

It is believed that the Prince of Wales will take away from India presents to the value of fully halfa-million sterling. The Bombay Gazette speaks on this subject in this wise:-

"We think that now that the subject of the presents to the Prince has come to be openly talked about in newspapers and in the bazaars, and significant culculations published of the amount sterling he will be able to relise in London from the fruits of his Indian tour, it will be obvious to all who have the love of the British Constitution and the honour of the Royal Family at heart that it is a thousand times a pity it was not peremptorily arranged before His Royal Highness set a foot in India that he should accept no presents except those which the means at his disposal would enable him to equal in the value of his return gifts. We do not, of course, believe the absurd stories about the Prince and his debts, but India unfortunately is a country where everybody is not of the same opinion, and with those who are fond of creating mischief between the rulers and the ruled these tales will find ready credence. They will be sown broadcast over the face of the country , they will be amplified in their progress; they will eventually have reremembrances in India of the Prince's visit. When Mr. Disrach defended in the House of Commons the royal tour in India when it was first proposed he said he did not wish the Prince to come out to India to any other footing than that of being the Viceroy's guest, because if H. R. H. did etherwise the expense would be vast both to England and to India. Sir Wilfrid Lawson, in his argument against Mr Disraeli's proposition, expressly said he feared that circomstances would arise which would compel certain Native Chiefs to oppress their subjects in order to recoup themselves for their lavish expenditure upon the Prince. Has not the expenditure to the people of India taken place which Mr. Disraeli feared? Will Mr. Wilfrid Lawson's shrewdness not be justified? These, at all events, will be the views studiously disseminated by those who have created the suggestive paragraphs referring to the value of the presents received by the Prince, and His Royal Highness will probably be the sufferer in reputation through the neglect of the Government, which fixed the amount His Royal Highness should distribute in the shape of presents, to prescribe at the same time some decent limits to that profuse liberality of the Native Princes which is, we fear, in some cases, inspired by a too lively hope of favours to come."

After the manner in which the Prince of Wales has accepted immense riches from the Native Princes, the people are quite justified in believing that His Royal Highness' tour in India has been concected with the deliberate intention of swelling his private means. It is a pity that slightest cause should have been given to any class of persons to originate such a defamatory scandal. Why, the common belief is that the Prince of Wales has come to this country with the intention of using the liberality of the natives India to liquidate a portion of his debt!

The following letter has been written by the king

of Burma to the Prince of Wales :-

From Mira Pawara Wezeya Nanda Yatha Pandita Tri Bawana Deiktaya Dipadi Maha Dhamma Rajadtherajah, His Most Glorious Majesty the Supreme Ruler of Burma, Lord of the Rising Sun, and Most Excellent King to the Most High, Most Puissant, and Most Illustrious Prince, the Prince, of Wales, Heir Apparent to the Throne of Great Britian and Ireland. In accordance with the custom of great Sovereigns, who send and return Embassies in order to establish new friendly relations, or strengthen the good understanding that exists already between themselves and the rulers of other countries, and in conformity especially with the feeling of exalted friendship which reigns; between England and Burma-which exalted friendship it was our Royal desire to confirm, we sent to London on the Ist of March, 1872, our Minister, the Kin Woon Menghee, who was accompanied by other officials of rank, in order that he should have the high honour of being admitted into the Royal presence of Her Most Gracious Majesty, and be allowed respectfully to offer to the great Queen of he England a Royal letter and Royal presents in our Royal Jame. Our Minister did not fail at the time to report to us the very kind reception which had been given him in England, by Her Most Gracious Majesty and all the officials near her Royal person, at which we felt intensely happy and most gratefully moved. On the great and auspicious event of your Royal Highness coming to India, we think it right, and agreeable to the exalted friendship which unites England and Burma, to send expressly our Minister, the Kin Woon Menghee, who is again accompanied by other high officials, to salute your Royal Highness will share in our own Royal desire, that the present friendly relations which exist between our two countries should go on ever extending and strengthening themselves, we now send for gracious aceptance by your Royal Highness, Royal presents, whose value lies in the amicable intention which causes them to be offered. May your Royal Highness be pleased with them. We pray earnestly that all the glory and renown which your Royal Highness has earned already may day by day acquire an increasing splendour. Signed, Miri Pawara Wozeya Nanda Yatha Pandita Tri Bawana Deiktaya Dipadi Maha Dhamma Kajadtherajah and Egga Maha Ranapati Woonshendaio Laghene Myoza Thenat Woon Kin Woon Monghee Mengthadaio Menghee Maha Menghla Sothoogyaio, Minister for foreign Affairs of Burma."

The present is not only the marriage season in India but in England too. The following matrimonial

news we take from a contemporary :---

"Lady Elizabeth Grosvenor and the Marquis of Ormonde were married the other day, but very quietly, in consequence of the recent death of the bride's brother's wife, Lady Richard Grosvenor. The presents, from the Queen's (a Kashmir shawl) downwards, fill nearly a column of the Morning Post. It is said that, when the Duchess of Westminster took her daughter on the Irish visit which brought her en rapport with her now husband, the Duke said warningly, his Grace being a bad sailor and his daughter a bad sailor and his daughter a bad sailoress, with an eye to the Irish-sea-passage, "Don't let Lizzie marry an Irishmau." L'homme propose, &c, &c. Apropos of marriages, I see revived the almost incredible report that the Honorable Mrs. Norton, the poetess, of sorrowill renown (cetat 68), is to be married to that literary and Art-loving Scotch Baronet, Sir William Stirling Maxwell, of Keir (œtat 58). The last we heard of poor Mrs. Norton was of her appearance in a Court of Justice pleading her own cause, and, though she lost it, displaying her lost it, displaying both a good deal of forensic acumen and knowledge of the technicalities of law, against a milliner who sued her for goods delivered. The poor lady is now immersing herself in law again, though this time not for her own behoof. The story is rather a curious one. Her hasband, the Honorable Mr. Norton, and police-magistrate at Lambeth was heir to the peerage and estates of his childess brother, Lord Grantley. He died before his brother, and, probably, out of pique at the widow, Lord Grantley left the estates, which had formerly always gone with the peerage, not to Mrs. Norton's son, but to her grandson, and his grand-nephew, a minor. In due course, Mrs. Norton's son has become Lord Grantley, but without the estates, and resides in Italy for the sake of economy. Mrs. Norton, however, confident in her knowledge of the law. is taking proceedings, on behalf of her son, to have the late Lord Garntley's will set aside. Whether she will plead in person before the Supreme Court of Judicature this deponent knoweth not.

If the correspondent of an Anglo-Indian contemporary is to be believed, the Queen is getting very

unpopular in England. He says :--

. The Queen will not leave England until the beginning of wril, but whether she will let the light of her countenance shine upon her subjects after the State concert in the Albert Hall on the 11th is doubtful. She will probably retire to Osborne. Her proposed visit to Baden-Baden is accounted for by the fact that the Princess Hohenlohe, to whom Her Mujesty was much attached, has bequeathed her an estate there which she intends making a second Balmoral, so that Setween her castles at Balmoral and Osborne and her

our Gracious Queen after she has secured the dowry of her youngest child. At least that is the prevailing impression here. I must also add that Her Majesty is incurring considerable odium by the immense sums which she is lavishing upon the Prince Consort's Macsoleum at Windsoe. No less than £200,000 have already been expended on it, and it really does seem very like a thoughtless waste of money. Millions of money have already been spent in different parts of the country in erecting memorials to that excellent Prince, who, with all his virtues, can nevertheless hardly he said to deserve such lavish tributes to his memory. However, I will not dwell upon the subject, I only mention it that you may know the real state of feeling on the matter in England."

The Prince of Wales is also being satarized in a poem called the Edward VII. The same correspondent says :-

It is a poor, dull parody of portions of Shakespeare's Henry IV. relating to the dissipations of Prince Hal and his "pals. "It is essentially low and vulgar in tone, and is evidently written by one who has no acquaintance whatever with the character of the Prince or of his associates, and a most curious ignorance of the usages of polite society. The writer is known to me personally. He is a Mr. Evelvn Jerrold, son of Blanchard Jerrold, and grandson of Douglas Jerrold. A clever journalist and magazine writer, but as a satirist a failure. Mr. Aglen Dowty, the "O. P. Q. Philander Smiff" of the London Figuro and a clerk in the War Office, has had to disown all connexion with "King Edward VII." on acount of pressure put upon him by the heads of his department, and therefeore on Mr. Evelyn Jerrold falls all the fame and shame.

Libels are the order of the day in England. Mr. Edmund Yates, Editor of the World, had to eat the humble pie recently, and Mr. Algernon Charles Swinburne, the eminent evangelist of the "fleshly school" of poetry, has brought an action for libel against the Examiner in consequence of some severe strictures passed upon his last poem by that journal :-

He claims £5,000 damages, and vows that he will fight the thing out to the bitter end. Mr. Williams, well-known as a brilliant journalist, has been entrusted with the defence. How any jury will be able to understand the drift of the language used by the Examiner on the meaning of Mr. Swinburne's poem is more than I can comprehend.

But no doubt the trial will be an amusing one.

It is not often that leading articles are constibuted by Kings, but it is said that the King of Sweden has lately been contributing several to a

Swedish paper:-

"They are entitled "Pictures of the Future," and advocate a strong development of a Swedish navy, as well as hint at the establishment of the Swedinavian kingdom which shall include Denmark. The latter is stated to be a favourite topic of conversation with his Majesty, and according to some accounts he raised the question in a significant manner during his recent visit to Berlin. Denmark would probably have some objections to the arrangement; but if the King really entertains such a scheme it is by no means impossible he should be indirectly encouraged in it by Prince Bismarck. Unlikely as the contingency now appears, circumstances might arise in which the friendship of Sweden would be of great moment to Germany. Suppose France and Russia were to unite against the new empire, and Denmark were to seize the opportunity to try to win back Schleswig-Holstein, it is clear that Sweden might not only keep the little kingdom in check, but give employment also to a considerable body of Russian troops. If, therefore, a few vague hints of the possibility of a grand Scandinavian State will keep the Swedish King in good humour, he has donbtless already received them, and may receive them again in clearer shape as the necessity increases, Apart from the hope of aid in a dangrous crisis, few schemes would be less likely to obtain the support of the Imperial Chancellor. His ideal is to incorporate Denmark with Germany, not to join it to a kingdom whose strength and ambition might one day become inconvenient."

From an interesting letter to the Times regarding the Parsees by Mr. Monier William we cull the following :-

"Your readers are doubtless aware that the Parsees are descendants of the ancient Persians who were expelled from Persia by the Mahomedan conquerors, and who first settled at Surat about 1,100 years ago. According to the last Census they do not number more than 70,000 souls, of whom about 50,000 are found in the city of Bombay, the remaining 20,000 in different parts of India, but chiefly in Guzerat and the Bombay Preidency. Though a mere drop in the ocean of 240 million inhabitants, they form a most important and influential body of men, emulating Europeans in energy and enterprise, rivalling them in opulence and imitating them in many of their habits. Their vernacular language is Guzerati, but nearly every adult speaks English with fluency, and English is now taught in all their schools. Their benevolesnt intitution for the education of at least 1,000 boys and girls is in a noble building, and is a model of good management. Their religion, as delivered in its original purity by their prophet Zoroaster, and as propounded in the Zend-Avesta, is monotheistic, or, perhaps, rather pantheistic, in spite of its philosophical dualism and in spite of the apparent worship of fire and the elements, regarded as visible representations of the Deity. Its morality is summed up in three precepts of two words each-'good thoughts,' 'good words,' 'good deeds;' of which the Parsee is constantly reminded by the triple coil of his white cotton girdle. In its origin the Parsee system is allied to that of the Hinoo Aryans—as represented in the Veda—and has much in common with the more recent Brahmanism. Neither religion can make proselytes. A man must be born a Brahman or a Parsee; no power can convert him into either one or the other. One notable peculiarty, however, distinguishes Parseeism. Nothing similar to its funeral rites prevails among other nationg; though the practice of exposing bodies on the tops of rocks is not unusual among the Buddhists of Bhotan.'

At midnight, on Dec. 31, the Centennial year was welcomed in Philadelphia by a crowd of 100,000 people collected around Independence Hall :-

The Mayor, Mr. Stokeley, raised the Centennial flag, a fac-simile of that hoisted by Washington in 1776 upon Independence Hall. When the flag reached the top of the staff, illuminated by calcium lights, the clock struck twelve, the vast multitude giving vent to shouts of welcome. Then for half an hour all the bells in the city rang. There were fire-works, selutes, shouts, martial music, and, altogether (says a telegram) a most tremendous noise. Similar midnight ceremonies were observed in almost

Next to being a Prince's wet nurse, says the Madras Mail, it is advantageous to be related to some member of the household of any gentleman who has the honour of a Prince's friendship:-

This must have been the reflection of a compositor in the Gazette Press, who took advantage of the occasion of the visit of the Duke or Sutherland, when H. R. H. wac in Madras, to introduce himself as the son of a person who had filled a humble position in the household of His Grace's Duchess. The appeal struck a chord in the Duke's bosom. He promptly asked what he could do for the compositor, and the latter replied that he was receiving a small salary, and would like to be a Press Deputy Superintendent, or Overseer, or something of that more gentlemanly sort, and on better pay. Pressure was brought to bear on a member of the Government. The Press Superintendent having reported that there was no vacancy into which the compositor could be pushed, was told to make one, and this being impracticable, a new appointment was made, that of Inspector of Materials, with a salary of Rs. 70, rising to Rs. 100 by annual increments.

A correspondent writes :-

"A curious story is told of a Ghost in the Railway premises here, which I give for what it is worth. It is said that in the masonry tunnel in the Railway enclosure, for conveying the drainage water to a tank outside the precinets of the wall, about 3 or 4 hundred yards in length, a Ghost has very suddenly taken up his abode, and is often heard to give utterance that he is from Meerut, and cannot extricate himself from his present dangeon; cries for help from the passersby-asks various questions and responds to those put to him. This story of superhuman agency as the natives term it, has brought the officials, such as the Kutwel, Magistrate &c. to the spot, doubtless to render, if practible, some assistance towards disentangling the poor prisoner Ghost, but as no visible object can be seen, and the tunnel being very dark, the act of disentanglement is beyond the capacity of human power-they have returned home in perfect bewilderment and utter amazement, not knowing what to say or do. Hundreds, nay thousannds, of Europeans and Natives have gone to see this Ghost -they might just as well have endeavoured to see the wind-for all that they saw. This apparition has so possessed the native mind with consternation, that not one will venture to enter the tunnel for a true relization of the fact of there being or not such a thing inhabiting the artificial passage under ground."

PRISON IN INDIA.

(The Englishman.)

Few spectacles are more painful than the juvenile ward of an Indian prison. Even in & Presidency jail, conducted under the eyes of a vigilant and powerful visiting body, and subject to the free play of European public opinion, the boyconvicts from a problem for which no satisfactory solution ha yet been arrived at. Such prisons, however, by no means re-s present the normal state of penal dicipline throughout the country. They enjoy advantages of which the District jails know nothing. In the first place, they are dealt with in a liberal spirit as regards money-supplies; a picked and highly-paid officer is invariably placed in charge of them; and anything approaching to scandalous over-crowding, or misrule, is promptly detected and cheked. In the second place, such prisons possess the still greater advantage of having a considerable body of juvenile offenders to deal with. The number is always large enough to justify separate yard being set aside for the purpose, and we are not called upon to witness the melancholy sight of little boys being shut up side by side with the veterans of crime. In District jails, the number of juvenile prisoners is too small to permit of perfect segregation, and want of space compels the authorities to shut their eyes to many consequent evils. A District magistrate knows this, and, by a liberal application of the Whipping Act, tries hard to avoid the necessity of sending any boy-offender to prison. But there is in every Province a certain residue of cases in which the judicial officers have practically no choice. The only alternative is acquittal, or a sentence in which a period of confinement necessarily forms a part of the punishment. And the childthief, after after a few months of jail-training, re-enters the world a skilled criminal for the rest of his life.

Some time ago we made a tour of the juvenile ward in one of the largest and best-conducted jails in India. Several of the offenders were under nine years of age; three of them were little mites, who weighed less than an ordinary English child of four years old; not one of the little gang could read and write in any language; and four-fifths of them had received no education of any sort. Their ages varied from 15 to 71. Yet, with a very few exceptions, they were imprisoned under second or third convictions; and one of them had managed to come within reach of the penal law no fewer than four times. Inquiries into individual cases only disclosed the preblem in a more painful and a more hopeless aspect. One poor child struck us as being altogether an unsuitable subject for jail discipline. He was about the weight and size of an English boy of five years old; a misshapen, shrunken anatomy of skin and bone, with a curious restless manner, and a malformed head. That a miserable mite of this sort should be found in a jail appeared so distressing, that we found out the committing magistrate, and asked him how it had happened. "What am I to do?" he said. "The boy was warned once for stealing in the street, whipped on a second conviction for shop-lifting, and when he came before me a third time as a confederate in a well-planned theft, what remained, but to send him to jail ?"

Government is perfectly cognizant of all this. The most painful feature, indeed, is that any effort to remedy the present evil only brings out the difficulties connected with juvenile criminals in a stronger light. Last year the adviceof the most experienced and successful jail-superintendents: was taken with a view to the Reformatory Schools Act. Those whose opinion deserved most weight were least hopeful with regard to the working of such a measured in India, In the first place, it was clear that if magistrates could only slave their consciences with the idea that they could send children to jail without running them for life, the number of sentences for the imprisonment of juvenile offenders would enormously increase. At present a committing officer gives such a sentence only when he has exhausted every other alternative; and many of them, as already indicated, humanely strain the law or the evidence so as never to give such a sentence at all. If a piece of confinement were provided for juvenile offenders, in which they would not be subjected to the contamination of the common jail, a great number of children would be sent to it, who are now dismissed with a whipping, or a warning, or an acquittal. Unless, therefore, the reformatory prison were really a place of reformation, and free from the evils of the existing jails, it would save a certain small number from the present form of contamination; only at the cost of contaminating, in a lesser degree, a much greater number.

Printed and published by C. N. Roy No. 2,

मङां त्र क्वकार्या छ। वि वस्य मस्म् क्रिक्टिक्न, यथन ँगशत वाजीय अलग अविषय मत्मर कतिराज्य, यथन आर्ता शांठ জ्या मत्मर क्तिएहन, उथन डाँशीत अकरू वित्वहना शूर्यक कार्या कता डेहिड। जिनि यिन इशाट अक्र वर्गा इन वाश इहाल वाश्र वर् मृत्नात मगग, উদ্যোগ, मांवात्रांव অर्थ छन्न नित्र्रक याक्टिन ना जिनि जात अक है कि कि तिद्वा जिनि (य পদবীতে পদ বিকেপ করিয়াছেন উহাতে পদ বিচরণ कतिए आत काशत माश्म श्हेरव ना।

ा अ इ र्डिक डेशन कि कड महा चा (य कड कर्श मान क्रिय़ क्रिलिन ज्रांब इयुवा नाई। এই त्रश जात्नक भश्यां श পরিচয় আশাদের পাঠক গণ প্রাপ্ত হইয়াছেন, जमा आगर्भ आये এक मङ्ग्रांत माननीलकात भारत- वस्। **छश मिए अछि। इंश्वनाम वाबू नाताश छछ (छोधूदी।** ইনি দিনাজপুরের অন্তর্গত চুড়ামন নামক স্থানের জমি- শামাকান্ত রাগ্ন, তারাপ্রসন্ধ চৌধুবি, নীলাম্বর मात्र। इङ्गत वमान,जा (मांश्रा भागिर्य इङ्गत थाज ध तथ मलुके इन य इंशिक ' तांत्र वांश्व वांश्व ' छेथाधि धानान कित्रशाद्यन। इंडिक (य छ्य याम छिल त्म इय याम প্রতি দিন তিনি আড়াই শত কি তিন শত লোককে वाश्व थानान कित्रशाहित्लन। इनि शाहा श्वादिनी थनन करत्रन अ त्रिलिक कार्या छे शलक श्वर्गिक एक श्कांत्र विषा जिम अ ठाति श्कांत त्रक मान कर्तन। इर्डिक्त निमिक शवर्यभिषे (य कैमि। मध्यां कर्त्रन - छोश्टि जिनि इहे महत्व मुखा जर्भन कर्नन धवर निज वादश व मारेल अकती द्राखा ध्रञ्ज कद्रन। ध्रजा निशदक विना ऋष्म धाना उ नताम छो। मन इंग्लाब छोक। कर्ज मिन थवर तिलिक आकिमात्रिमितात्र यथन य छ।कात मद्रकां व इश जा इ। छ विना चूर्म जाइमिश्क छमान करत्रन। इंहात्र अप्निक छिलि मन्त्रुष्ठीन आह्य। इंनि निज वादा धक न कूल ७ धक न छि । जिल्ला मित्र वार्य कित्रा-ছেम ध्वर (मगीय हिकि ९ मात्र छेन्न जि मिमिल कर्यक জন কবিরাজকে বেতন দিয়া রাখিয়'ছেন। রাজ কুমা-त्रक होन २८ थान याहत उभावी हा मन देपहान (नम थ १९ जा मता खिनिया मछ छ इहेलाम (य, जिनि छेहा গ্রেছণ করিয়াছেন।

शवर्ष मन्छे जा दमन

२८ পর গণার জইফ মাজিষ্টে ট ভাগার সাহেব দম-मयात्र काग्छन्दमण्डे याजिएछ हे इहतन्। किन्छ इनि वार्ठादश मादमत निमिन इति लाग्राश शर्दन माद्दर তাহার স্থানে নিযুক্ত হইলেন।

छ्वालीत जाइले माजिए छेठे छेईकम् माएइव क्वांत्रम-श्ट्रत माजिए है के करने के है ते इहेटलन।

, तः शृत्तत জङ जापे माट्य महमान मिश्टलत जङ **इ**हे(नन॰।

इइटलन।

"यानमश्र याजिए है किश मार्दिन दश्यदत्र जन

ज। शनश्रत्व जरेणे माजिएके हे क्रेन मार्ट्य माल-म इ । त्र मा जित्से हे इ हेटल न ।

मार्क (जारनन मार्ड्य महाज्ञांत क्ट्रेट्लम ।

मःवाम ।

"— (वस्रिलांद्र थक जन स्मम अ माद्रव जात्रि विश्व श्रेष्ठ इन। इंश्रामित (कान वाहिट्ड निमञ्जन इत। भिथाति आदियो कर्यक **जम** मार्ट्य ७ (ग्रम्य निम्ञन इहेश हिल्ल- (मरमङ्गा या ऋत्न छेशदबन्धन कर्डन छ। इ। इ छेशव अकि किरवामा इन नागमा या निएक शास्क । इकार न्माम्मानी এक जन (मदमंत्र मस्टिक ते छे भन्न भाष्ठिक इत्र। क्रिक्टल डारांत भाषाटक जाश्वन धविया यात्र। अक जन माद्य शालियाल खिलिया (मोखिया आएमन अवर (सम्दक विश्वाशा (मिथिया जिनि जो शिंदक क्षा जो है से। भर बन। (सम मार्ड्य क्रू जिंड इन, मार्ड्य डोक्षत्र कान स् र ख ममूनात्र

छिन्न जिन्न कि व्या किट्लन। कि क्रू क्रिशे प्रति मार्ड व जानिएंड পান যে, যাহাকে বাঁচাইবাব নিমিত্ত তিনি এত যত্ন করি-তেছেন তিনি তাহার জী। ইহা জানিতে পারিয়া তিনি जेबारिकत नागत इन धनश जांचा मंत्रीरत्रत शक्ति कि घांच पृथ्विना करिया (मरमत जा ये इन्ड द्यांता निक्रीन कर्तन। मा(इव ७ (भम উ छ यह द का भाहेश (इन, किन्छ हेहादा (व का अक बतक भिन्न इहेगा इन बाहार इहार व मन्त्र वार्तिका लोड इउगात मञ्चावना नाई।

— बिद्धां क वां कित्र। अकाल कि शतीका ब इेड जी व इदेशराइन।

खश्य (खनी।

इतिक्ठन्य (मन, शिशिन क्रम (घ!स, याशिन नाथ (मम, রাম শরণ লাল, চতু জ দাহাই, न প গোপাল

षिजीय (खानी।

शाल, यञ्चाथ शक्रा, टिज्जाह्रल भिज, मट्जल हिल ठटिं। श्रीधार्य, देवक्रीनांथ (घर्ष, यञ्चाथ वटन्माश्रीधार्य, (मद्बल्जनाथ सूत्थाशाम् ।

— চুয়াভাঙ্গার মাজেটেইট ক্রিন সাহেব ভাষার व्यथीनम् প्रकामिशक करम स्म ह्लार्म वावक क्रिएं इहेल। एक्स ख्रांगक मश्चां इहेशा हिल मिंडाशा-(इन। जिनि मन्त्र जिन वक्ती दाद्वाशादीत छेलाका कतिया फिल्लम। अहे वाद्यायात्रिट विख्य होका वाय रहेश्राष्ट्र। जाँश्रेय मरकूमाय यज लाक जाष्ट्र मकल (कई निमखन कित्रियो ছिल्नम, তिखित्र क्रियानात वर्ष जानत वाद्यां यो वी इय मिन ছिल धवर इंशांट कवि इइंड मां छेक जिन्न शर्या छ ममूम । जारमाम इहेशा हिल। भार्षत्र श्रावत्र माजिए देवे छिलां त मार्ष्ट्र व किन मार्ष्ट्-दिव शेथ जाञूमवर्ग कविट्डिट्न। यमि मङ्कूमाव माजिए डेए हे ता थ नामा छे भारत था उद्यान करतन जारा रहेटन जाराद्य करित्र महिल भागन क्रिट्ड इस ना। डाइात्रा यथन याहा इन्हा डाइ। क्तिएक शाद्यम जवर त्थामान क्लाफ म्याम ना क्रिया पिनो ज्यामन कड़िड शाद्वन। जिह्न माद्यद्व ज शर्शा उत्रांन कार्या कृती (मर्थान नाई। जानापना मङ्कूमांत माजिए दे छित्र। य ममूनत कार्या कति ए छ व इति छ छोड़ाई क्रिडिएइन, छदि इति (सर् छ य प्र तिथा-इशा अधीनश्र नाजिः, निर्शःक अहे साल वाधा करिया छन (य, र्जिन यमि जाज मकन एक श्रेष्ठ श्रिजाश क्रिया रत्न धार्वमं कशिए रत्नम, जार्ड मकल्न कर्त्र जिनि य थानाली जातलञ्चन कित्रमार्ड्न य न इंश्लिम शवर्षिणे अहे व्यवाली व्यवलञ्चन क्रिया ताजा नामन कदिएडन, जारा रहेल इंश्वारक्षत्रा जाक शृशिकीत व्यक्षेत्र इहेट जन এवर जांत्र वर्ष वाज शृथिकीत मर्था धक्छी छेन्न डांका इरेड। ऋिन मार्ट्य निष्धाः न भिकारल मार्ड्य २८ श्रेत्रांशांत जारेले माजिएके हे विम्नीयिमर्शित इम्स्यत क्रांहे यूनियार्ड्स, अथन जिनि इंशिनिगटक लाइग्र। याद्र। इंक्ट्र। जाइग्रें क्रिंड পারিবেন। যত্ন করিলে ইংরাজ মাত্রে এ দেশীর দি:গার क्रांडे अहे स्र भू लिए अभित्र वर्ग।

— ठन्मन कार्छित्र शाश अशृष्टि कार्छ ताथ इस शृथिवीर ७ वात्र मारे। महोश्दत ज्ञान कार्ष्ठत विखत वात्राम इहेता माजित्यो है। शाका इश जाशना जाशन जन जन जला किन्छ यद कतित्व कार्षत खन इति इत। ठन्मन कार्ष रिक्र श षादा यही मृत्य वदमद खाय व क छाका जाय इय। ठमन इ:कव ছांशा (यशात्न পতिত इस मिशात्न कि इहे জ(य ना। यूननाम नामक छात्न मर्खाएशका डेश्क्रेड हलान इक्त जार्य। अथारन स्यममूम इक् इम रम छेलि मश्रम ७ किरीन अवर देश दाता छे जग गोका श्रास्त्र । जाशत छोटन (य ममून इक इय डाइ। उठ वड इय न। किन्छ ত। हां अ शक्त जार भाषाकृत धार्यत। कमन द्वर्षत कार्छ नान। निध कार्छ भाव छाञ्च इत्र। दिन व्यक्ति।व निमित जनदनत धार्याक्रम इय, जावात हेश इहेट जू-शक्षयुक्त छे९क्रिके व्यां व्याख्य श्रा

--इंश्न ए मन्या जि धकती खरानक घढेना इरेग्रा शित्रोटि । २) (न जारूगोनिटक इंश्लटका छेवक थाएमटन ङत्रोनक, विद्का ७ ज्यांत वर्षन इत्र । इत्वाद्यांत म् मय मय मूळ भ्यां व देशता नके कद्य ?

ऋ हेमां इंडेट इन ७८न अनि गोड़ि महमा इंश्व छे ग्रा পতिত इग्र थार जगानक मश्यां छेश हिं इस। नक हैं । ट्यां विश्व इस, এवर मकल मित्क छिन्न जिन्न शहा शहा (लाक मिनि-হারা হইয়া অতিত্তলা প্রায় হইয়া রহিয়াছে ইতি মধ্যে लखन इहेट आंत्र এक शांनि ब्रिल अरा मंक देयुथ आंत्रिया मिरे छात्न छेलिएड इत जवर रेशांत माल जलत प्र थानि नंकट छेत्र खरानिक मश्चां छ इरा। त्रां बि जासकात्रमय व्यावात वार्षिका अवश जुयात्र वर्षन इइट जिल्ल। अमन অবস্থায় এই রূপ সংঘাত কি ভয়ানক ব্যাপার তাহা अन्यादम अञ्च क क्षे याहेट अर्दा याहाता এই বিপাদে পতিত इইয়া ছিলেন তাহারা প্রথমে ভাবি-लिन (य, वृत्य शृथिवी नित्र इस्ल। এक हे मर छात्र छ एक इहेटल जोहांत्र। (मद्यम (य. माड माड माड के किनात्रमान रहेश द्रशिक्ष वर विश्वाश वाकिए व वर्ष वर्ष शंशंग आफ्र कित्रशंद्ध। याश्रांश भक्दित निदन পতिত इहेश हिल छाडा मिशदक करम छेकां व करा इहेल এবং আছত वाकि मिगोल यथ। माधा (मवा सूआवा कता क्रिय তত অধিক লোক হত नाहै। इत्र खन श्रुक्ष अ छ्य छन छी लाक मृज्यातम পতिত হয়। अथम मश्चार्ड कार्षत छान नसे रश्नी, विजीय मश्चार्ड इंशापत गुजा इत।

—পুরাতন পৃথিবীতে পুক্ষে স্ত্রী লোকের উপর আধি-পত্য करवन किन्छ ञ्डन शृथिबोएड ठिक ভাষার विश-त्रीज।] आंगता (व तथ खीलां कित छेथत घावशंत्र कति, व्याप्यतिकान जी लांकिता शुक्रियत था ७ व्याप (महे ज्या वावर्षत आंत्र कित्राहिम। अक जन आर्मित्रकान महिम् ত। হার সামীর মৃত্যুতে এই রূপ বিজ্ঞাপন নিয়াছেনঃ 'ञनादित्वल जन त्याद्यंत्र यादिष्ठ व्यामात्र स्वामी त्यः जदनत म् जा इहेशाएइ। याः जन ज जिल्लां मांख अनम् अक-তির লোক ছিলেন। গাহ স্থা সংখর নিমিত্ত যে সকল मधुद्र खण ठां हे जाहां त्र तिलिकण हिला" मिरम छेड-इल नागक आंत्र एक जन आदिमित्रिकान महिला जाहात्र माभीत जीविज দশার আর এক জনকে বিবাহ করি-शार्किन। इनि উভয় आभीत्र महिक महर्गम क्रिटिन ছেন। তিনি স্বাধীন প্রেমের এমনি গোড়া ষে তিনি বলি (इट्डिम (य योशंत महन्न जोशंत क्षेत्र क्षेत्र इहेद जोशंत-তিনি বিবাছ করিবেন। মিদেস উডছল আমেরিকার वक जन विमारविजी महिला विलिश श्रीम्इ।

— অনেক দিম इहेन আমর। প্রকাশ করিয়া ছিলাম (य, यार्षित निक्छे धक्छी मनुषा निक भागा शिवार्ष नीम शिवीर्ड मण्या, डि এই क्रथ आव अक्रि घडेन। इहेबा গিয়াছে। উক্ত স্থানে এক জন কাটুরিয়ার সাত মাসের একটি শিশু সম্ভান অনুদেশ হয়। অনেক অনুসন্ধান क्रिया পा अया यांय ना। क्रियक मिन श्राद देश दी खो श्रुक्रिय काम त्ला का छ । जिल्ल यात्र । इति भिष्य मन्।-तित् क्रम्ब ध्वि श्वि श्वि शिक्षा (य मिक इहेट क्रम्ब श्रीन जागिए जिल तमहे मुश या हेश जाहारी जिल्ला त्य, তাহাদের হারান ছেলেটি একটা নেকডে বাণ্ডের शिर्ख ब्रिह्य शिष्ठ । मुखानी निजित जिल विष्ट ये मुखा ষে এক মাস পর্যান্ত তাহার পিতা মাতা হইতে দূরে ছিল ভত্তাচ ভাছার শরীর দিন্য পুষ্ট ছিল।

— এक জन আমোরিকাবাদী চিনদিগোর সম্বন্ধ এই राक्त ज। कदबन। किटनब्रा कालिकाणिशां अभव गएक श्राय श्राय करत । जोश्राय (चंजोक यमू स्वाद्यत शकार २ जिल्ड थारक जवर कन्छ श रय ज्ञाश शिंतर ने स्व थत्रामित्क षाण्किम कर्त हेश्राज (भरे क्रेश स्थिजान-मिशिटक छेडीर्ग क्रिया यात्र । हित्तत्रा कालिकारिकारिता इंटिड क लक्ष छ। त। निख (मः ल देश) शिश्राट्ड, किछ याशाता এक है। পश्रमा ७ कालि (का विशंत वात कर ब ना তাহার। শ্রেতাজদিগের সহিত মিশে লং ভাহাদের यूनिक (मांकान शर्यास नवस भाषात जाखिशशंख जासात्मत (मट्न शांठाहेश (मग्रा जाहेन उ धर्म योजन वाजोज अगन कोज नाई योश्टि हिट्न द्रा श्राट्य ना कित्र गिर्मिक देवल अस किट्नवारे शब्द उक्दा कालिएकानिवाद किन काल काश्य इंद्या देखि कर्य। मीन कामिनाम्बर्कारम २०००० श्वाद किन आदि । जो होता द्य अश्टल वाम क्रम उथाकांत शृह धवर ममख (माकांन किनामदशंत्र त हेशक्री (वैक्रश विक्रशक्षी (य, त्य मकल शाम) व्यामवर्ग म्लाम कितिमा जाराशिशिक इंस्तिम स्वार्पत क्ट्र लर्

—मित्रिको मीर्श्त छेखद शिन्हरम देखि मधा ख्रांनक या इहेश शिशाद्य। (क्री जाशा कृत्य छेक दीर्भ व्यक्ति वाला माव या इइमा हिला এथानकात हेकू (काराशिव व्यवस्। वाविषय भरन्य यजनक।

— युवताक वरे मार्क जाति वात्र वालाग्यान कतिर्वन। क्षे जातिरथ नर्ज नर्थन,क जभाग भौहितन **डांकांत (क्वांत, (क्वांद्वल (धांविन ७ (क्वांद्वल** वाडिन मार्ड्यक नाइडे डेलाधि (म अर्ग इरेट्य। अजन-ভিন্ন নিম্ন লিখতি সাহেবের। কম্পানিয়ান উপাধি थाथ इडे(वन:-मित्राणिन जाराएजत काएथन भिन मार्डिकः ग्वर्वत कार्यस्वत मिलिछोती मारकिछोत्री कर्तिन जात्रलः लर्ड नर्थव (कत्र जांड का ज का छन (वत्रा-दिशः वत्रमात (त्रिमिटफफे (मलिल मार्ड्यः (मज्ज द्र्था-त्रमनः (मजत वाष्ट्यार्डः, कर्णन आत्रमात विनमः वरश कदर्गल माइटकल। युवव्रांख এ (म्ट्न व्याशमन कवांश णात्र (कान डेशकांत्र इडेक न। इडेक, व्यत्नक छिनि माट्श्व उत्रिया (शतना

— खना याइटल्ट् या, मित्री मीलात्र भावन्त्र मात्र वादिशांत किशांत कामाइ एवं मार्क भवर्त न शाम नियुक्त इइटरम এवर इरकट्य शवर्व मात्र मात्र वात्रशत कित्मडी मित्रिही द्वीरिशत श्वर्शत इहेश ज्थां श शमन क्रियन। इश्लिमगान वल्लन (य, अही जनवर माज।

—কলিকাডায় আর এক খানি সাপ্তাহিক পত্রিকা। छोत्रम् क्रोनिकल। ' छ। मृश्कां अ প্रस्तां अ श्राच मकल इंशां ज जानिजाम जात्र वर्ष वे क्रिय क्रिय ज जात जिल्ला अ क्षिकार्भ क्षकाभित इक्ट्रा अजम् जिन्न मार्थात्र किन्न छेश्रिडेक घटेना द्वारा क्षकाभित क्रेट्रिड, क्ष्रि बालिका मन्नीय विषय छ इंशाङ निथि इंशाङ इंशा छ कार्या उर्भव कविषय निभित्न रेश्न एउ यूनकिमारक ভারতবর্ষে আজ কাল যেরূপ চার আবাদ হইতেছে তা- এখন উত্তেজনা করিতে হইতেছে। পরিতেরা বলেন बार्ड य अज्ञभ अक थानि भिकिका मुम्पन्न जार्भ हिलाउ (य, इन बागुन खर्ग लाक कर्मिह कि जकर्मणा इन, शादत जारा वला वाङ्ला।

গ্রহণ করিতে আরম্ভ করিলেন। এ দেশীয় শিক্তি রাশিতে কঠের শরিরী মুসলগণ ন জ তিকে বিলাস युवकरमत्र जीवरनाभारत्रत वह वक्षि माज छन ছिल किछ मागरत जाममान करत्। इंश्त्रां जाजित मत्रीरत वह . मन्म जि दश्नदी अण्डशार्ड (द्वेवद्र नामक अक जन शिंद्र- इंश्नित्वं अर्थित जाडांव नाई। ভातडवर्धित धामारम श्चीत्र निर्कारमत्र त्रोरका अकृषि छेक्र विख्यत्र कर्म्म नियुक्त इंश्त्रोक्ष्मित्र की बत्नार्थारत्र अखाव नाई। खात-इरेशाहिन। आगत्र शिनशा इः थिङ इरेलाग य मात्र जिल्दित धमादिन छै। इति अ एक दिन्त । मानात जल्बत जनूरताथ करम देनि विमाण इराज राहे। किन्छ वर्ष, जीवत्नाभात अ श्रष्ट्र सम्ख जेभारत

माइत्न जकती प्रश्रीना इहेशा शिश्राह । इहे थानि शाष्ट्री। श्रूक्षित्रा यञ्च कतिया रिमना शाहरण्ड्न ना। त्रांक मखी প্রায় এক সময়ে বিপারীত দিক হইতে বহির্গত হয়। মাডেটন সাহেব প্রকাশা বক্ত,তায় এখন, ইংলড়ের अकिए विक स्थारन त्यांफ कितियात अगत छेखत गांफीए । यूवक मिशंदक व्यालमा शत्रेख ना शहेगात निमिन्छ छे १-मश्यां इत्र । कूड़ी थानि गांडी हुर्व इहेत्रा यात्र अवश (एकना कति एक वाशा इहेट एहन। वृति इक्षिन छ जिन्मी इहेश পড়ে। এक जन छ। हेवार - পাওনিয়ोत বলেন যে, আগামী ২য়াও ৭ই এপ্রে-७ ठाति जन काशांत्रमांन किश्वि९ मांव आंघांठ थांथे रहा, আগর এক জন ডাইবার গুকতররপে আহত হয়।

— इश्ल एख कर्ज् शक्ती रात्रा जथा कात्र रेमना मन तिक्रित निमिख क्रमाशं उच्च कित्र उट्टन, क्रान मर्ड क्रकार्य। इड्टि भारिटिएम ना। धन इक्ति बारो देश्न धनामी-मिट्रांग (जारा विलाम्म इच्हा वनव इस्ताह । देव्हा श्विक डीश्राया अथन युक्तत करिंग्रजा महा क्रिट्ड ठाट्या मा। इंश्लिम श्वर्धिय अई निमित् आहेत हात्रा वाथा कतिया थाजारांगटक रेमना मत्न थाविक कराहेवांब च्य क्रियम च्छित्र क्रित्रशांट्स्म।

- अभारम यक संवर्त (क्रमाद्रम कि म्थिए दिन्छे शंबर्गत वाशंयन करत्रन मकल्लि अख्ड श्रीतवायी। व्याशिक श्रवर्तत (क्रिया कि क्रिश श्रीत व्यमी उर मश्रक्त এक थानि मदाम शदब अहे क्रश ध्वकाणिक हो बाद्धी २० (ण कानुशांतिए जिन महादांगीत मटल (मथा कतिवांत क निमिन्न जामवद्रदर्भ शंभन कर्त्रम। जार्शित शिव जिल्म जार्मक बीटि (मशान रहेटि धोडार्रायम कर्त्रम। थेडार्रायम क्तिया এक बामि भढ़िव छेख्य थिनान क्रिया विकास

विष्युत निमिख (मथा माका कित्रि कित्रि किन इशांख कि प्रांख कि खेका न कर्त्वन मा। ध पिट न शवर्गत एक ना दिन मिर्शत थान कर्म महनात्र करा। ल फ लिएन (वाथ इय देश्ल ७ था किया भूकि इरें छोड़ा दे অভ্যাস করিতেছেন। তিনি যদি প্রতি দিন শত শত लारक व्रमा भाषा नाकार कतिए भारतन वनर वामि वामि शव लिथिए शाद्यम छोश इहेल छै। श्र এখানকার গাবর্ণর জেনারেলের কার্যা করা আর কোন मटि किठिन इइ ति ना। श्वर्गत जिनाद्रिक्ति। श्व वकिं कार्या जारह। एक त्र भिका त करा। यमि लिएन वरे कार्या जल्लात इन जारा रहेल जारा वालात जात मीय। थाकित्व मः।

—हेश्न ७ किलाए अणि विन मकारन ४२ थानि खबर जाशत्राहरू as शांन देननिक शेख धकां भिक इता। इंश्लिए त्राजनीि मयदि प्रेजी मल गाए, लिगादिल उ कनजात्रदविव। देन नक भटावत विश्व थानि खाशम मान्य खबर ७७ थानि छिजीय मनश्र ৯ थानि कान शरक है नदर।

—मञ्जिबत्र भ्राष्ट्र ग्रेम मश्ल्भ जि कोन शादन वङ्ग्री श्रमान काल (आठ्वर्शक मद्याधन क्रिय़ा बलन · প্রত্যেক পিতা মাতার সন্তান সন্ততিগণকে এই ভাবে िक्षिक्षा अशासन कर्ता ऐठिउ (य, अशद्रद्र मुशादिको এवर অপদার্থ ন। হয়, করেণ আলিসা পরতন্ত্র বাজি-किस वामार्षित्र विदिवहरात्र कर्मणा कि व्यक्मणा कित्रवात्र — इंश्टब्राख्नता करमर (मनीत प्राख्नारमत मर्था ठाकूती आव नामा विथ कात्रन आहा जारू । जात्रवर्शित थन দ্রোবাদ আহামন করিয়াছেন। লভা হইলে ভাহার সঙ্গেই অনেক অনিষ্টেরও উৎপত্তি —গত ২৫শে ফেব্রুয়ারীতে সি, আই রেলওয়ে হয়। এই নিমিত্ত বীয়াপ্রামণা বিটন জাতির মধ্যে রাজ

> (लंत मः था लर्फ लिएन निन्छ ॥ इ जात्र वर्ष श्रामार्थन क्तिद्वन।

— टिनां ब्रिन वां वू इस हस वर्मां शिक्षां व नामक अक वाकि आमामिशिक अकि जिलिका भाषाहि देश मित्राहिन। (इम वातू बदलन (य, जिनि उना छेठात जाशूक्त छेयध আশ্বিক্ষার করিয়াছেন এবং এই ঔষধ ছারা তিনি যত द्याशी हिकिৎमा क्रियाहिन डाइएम्ब कड अन आद्राशा लांड कित्रगांट्ड ७ कंड जन मृजा आतम शिंडिड इरेग्नांट्ड তাহা উক্ত তালিকায় প্রকাশিত হইয়াছে। যদি হেম वावूत जालिका विश्वाम कर्त्रा याग्र जारा रहेल जारात्र लेयध दात्रा श्रक्ते जारूर्याक्रिश (तागीगण जारतागा लां कित्रगट्ग। ४०२ खन द्रांगीत मध्या ७१० खन व्यादिशाशा इय व्यव २३ जन मांव मृजा आदम शांज ज इया এই ঔষধটী পারীকা করা কর্তবা। হেম বাবু छेश विना मुला विज्ञन क्रिडिएइन।

. — गिट्णांत्र (मट्णांत्र त्रांकां व्यट्नक मिन व्यविध व्याट्क-রিকার কয়েকটা জাতির সঙ্গোর সংগ্রামে বিলুপ্ত इहेशाट्डन। अहे युक्त गार्श्ड इहेशा जिनि भेळा त कान ক্রেন। তিনি প্রতি দিন শত শত লোকের সঙ্গে নানা/ রূপ অনিটে করিতে পারিয়াছেন কি নাতাহা আমরা। তাহা হইলে তিনি সজ্বায় হয় ত অধমুখ হই বন

खानिना, किन्छ निष्ठा कर्म विश्वाशत इहेट उट्या जिन डाँहात रिमगारान स्विन्धिंड कताहेगात अयुक्त कार्या यूठ क श्रांक हालाई वा व नि यन जिल्मनी इहेट यू निक्रिंड (याक्षाक्षिक व्यानयन कड़िट्डिट्ना व्याक्षात व्याक्ष वार्यं मामक्षमा कि विवाद निमि छ इंश्ल छ इहर छ बक छन यञ्जी आवश्न कतिशाहिन। अदर्शत मश्कूलनाहर्ष स्राय थात्मद्र कडक छामि जाश्म जिमि देशमाखा निक ने विकास करित्रशर्हन! व्यानात उंशित (मः नेत्र मर्था (य मगून्य (त्रम अर्य व्यार्थ जार्थ देशनर अत्र निक विक्य कित्र व (इन। डाँशत कःम (यक्त १ इन न। इहेटडः इ डाई। जान्त्रा मित्नत मर्था इय मिनात (मना क्षानिया कि इंश्निटि त अधीन इहेर्व। अभर्ग, ख (य मिण अभन्न मिण्टक -পরাধীন করিয়াছে, পরিণামে প্রায় সেই দেশ অধিক্ত দেশের সঙ্গেং রসাতলে গিয়াছে। জার-মেনি ফান সকে পদানত করিয়া পরিণামে কভি-शिष्ठ इहेश्र (इन। প্রশিরার (দনা সাত एन इसि इड्शांट्ड जन्श द्रांटकात्र यद्या त्य तथा त्रांनद्या रा তাহাতে विमगांक व हाक अथन कान विश्व छेशिक्ष्ड इश्च नाई, यि मिन विमयांदर्क त्र मृज्य इक्ट्रेंच (मई मिन श्रीभाशिश मिरी विश्यांश छेशश्चि इहेर्व। (वार्षत পত্তনের কারণ এই, গ্রিসের পত্তনের কারণ এই। মুস-लमान जांजित पूर्गिज्य कर्रत्न अहै। इंश्लक्षांभीता এখন অনেক সময় মনে২ চিন্তা করেন ভারতবর্ষ অধিকার कित्रिया देशल एवत महाल कि जामहाल इदेशा एए। या पे एक ভারতবর্ষ জ্ঞা করিয়া দেশে প্রত্যাগ্যমন করিলে অনেকে उँ। इंटिक এই विष्ः स প্राथ कर्त्रम। छात्रजार्थ अधिकांत्र ना करितल इत्र इंश्लिए व इंध्रिकारिय जायमञ्च इंड्रेड इइंड ना, आंख रिमना मल इक्तिय निमिछ छादांत्र लोला-शिंड इरेड हरेंड नो, ७ व्याविणिनियांत युक्त छा लांड कित्रियां व्याचा शीत्रव कित्रि इहे च ना।

— जामादमत रूख्य देमना थाक मात्र अक दश्यम् जारामी 30 रे मार्क रेश्ला श्रिजाभा कितित्व।

—शं ३२०१ (क ब्लाशंत्री जादत्र मरनाम जाहिता (य. त्रांक পুত রামবাসায় পেছিয়াছেন। সার জং বাহাহর उँ। हो कि वाडार्यनात निमित्न छेशिष्टिक शास्त्रम। त्रांक शून उँभवुटि खार्यण कतित्न मात्र ज्ञः वादाद्व मणि माणित्व थि छि इहेश । छै। हो कि छ छ। येन। करत्य। युवराष्ट्र छ ९ शब मात्र जः वाशाव्यक उंश्वात छ। बुद्ध मर्गन करिए यान। ब्रांख भूरवं मन्नानार्थ जातक छनि (नभान रेमछ मर्थाग्रमान इग्न। यूववाक जाशामित (क्शिया) िर्गिय माखाव প्रकाम कर्त्रम। ७९ शत्र ताज श्रव (नश्रां त्रांका अर्वणं कर्त्रम। वश्रांत त्रमांकारत भौकारत्रत्र छेरिनाशिकत्र। इत्र। छा। छ। मठ० मंड इखि- धरे निमिन निर्माणिक इस। धरे मछोट् इति नाष्ट्र इति বাজে শাবক, তিনটি ভল্লুক, হুটি ভলুক সাবক, একটি চিতাব্যাত্র ও অহাত্য বহা জন্ত শীকার করা হয়। জং वाश्वत युववाजातक अन्ति वज्ञ जन्छ छ शकी उপ रात्र मित्राट्स ।

—हेश्नएखत्र अक जन रिमिन्क लखन इहेर्ड १० माहेन পথ २५ घणे। ৫० मिनिए जिमन कित्रिया हिन। इंश्रेत मध्या जाए। इ घणे। जिनि न एति जविष्ठि क (त्रन्। य जमत পথ তুষরারত ছিল, সেই সময় তিনি এই রূপ গামন करत्रन। এই वाक्ति जञ्ज 88 माहेल श्थ 30 घणीत जमन करियोर्डिम। अहे नाकि ध्रथमवाय छाडि घणीय आ० माइन शथ এवर विजीवात थक श्वीत 8 माइनिश्य . जगन कतियाद्वन जन् देश्नजनामीता देशदे जन वान्ध्रमा इरेग्नाइन (य, रेरा मनाम भढ़ा छेठारेग्रा मरा शोलयोग जावस कविया एवन, कि अपिएल घणे य 8 गाईल कि जिन गाईल शंगन कंत्रिए शादिक अक्रश व्यत्नक लाक शाख्या याय। शुर्व कानीय कान विदेन य नि श्रेनर्जी जि इन এवर श्रुद्धनन (य. जा इ। दिन व अक जन घणे। य ा। भारेल शथ जमन क्रियाहिन ज्वर जारा नर्या देश्वारकात्र। তাহাকে উটেক্ষরে প্রশংসা করিতেছেন

- এই तथ जनत्र या, लर्ड नर्थक्त उ श्रभन (मन्। लिंडि जारामी एइ मार्क कलिकाडा পরिकाश कर्त्रिश णानाकाराम शरम क ब्राजम। श्राम (मनाशिक मख-वरः व्यात किनका जा य कितिया व्यामिर जिल्ला ना। তিনি উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে কিছু দিন যাপন করিয়া (वाश्वाइ इइशा विलाज याजा क त्रित्य।

- मिर्वल (कार्षे आमि: नत्र शम (वाध इय डेरिया यात्र। लिश्हिनके शवर्व शंज वर्मदवव विश्वार्ष लिशिया-इ (इन (य, मिनिन (कार्ड जामितन ता मूह कर्भ र्वक कार्य। कर्त्रन ना, जावात्र जात्र अक शाल छेशान्छ इइताहा यथम मिनिल (कार्षे आमिन नियुक्त र्या, जथन शःनं मार् भिक्षां कर्त्रन (य, व्यशे भ्रजार्थिश वाधिनम्ब निभिष्ठ (य अर्थ जामाल एक अर्थन क त्रित्व का इ। द्वादा इकार मत्र (वडन डेरिटन, किन्छ शंड वरमदवत किमादव अकाभिड करेशा (इ. य., इराम्ब (वड्य निम्न श्वर्ण भार्षेत्र अक्रिक्त प्रकामण मिएक इहेश्राड्य । शार्वत (जागरद्रालत व्यादमन व्ययमाद्र এই निधित हा हेटकार्ड जिना व जन-मिशा कि लिथिया भाषा हेश एक्न या, शवर्ष यह अद्भ मिलि वार्धिन दांत्रा (म्लांत व्यथकात कि देभकात इश मि विषया जातिक न मः ज जार्ड। इंडा द्रा कार्या कर्त्रम, हेर् व्याज एक उत्र । अहे कार्या मूनमाक व्यथका তাহাদের তুল্য কোন রাজ কর্মচারীদিগকে নিযুক্ত क्रवा शवर्षिए छेत्र व्यं ङ कर्छना।

—नर्ज निष्ठेन मञ्चव उर २३। व्या थिल जा विषय अथारन পেছিবেন। তিনি ২রা ঝা আর্গাতি পারেন, ৭।৮ই जादिए निक्ठत्र ज्यादन (भोहिएवन।

श्रुवार छाइत भागा जात्य नाई। जार्शत नाना तथ छाडि हेरात विदर्शव यञ् भोषांत প्राञ्कांत इरेगा श्वात्व श्वात्व प्राप्त प्रक देशश्वि इंडेश्वार्छ। अवाद (मव्हां व्यवस्थ (मः श्रा वाल्लाइ.७ वात्नदक मनक्डि इहेशाएइन। अ श्री खिन्मूर्यन इहेल गा। जानक श्रांतन अथन जात्र कलकरो छेलाञ्च कडेशाएक। दिकार अप वरमद्वत नाथ आव इर्डिक छेपीश्विछ। ग्रेनर्गिष् अकर्षे मत्नार्या कदिल अवाद वाल काल इहे ए जुड जुड " अकि कथा खान আবার গত হ'ডিকের নাম অনায়াসে বাজলায় একটা আদিতেভি, কিন্তু মহালয় ভুত যে কি পদার্থ তাহা कि तो मर्या गई छ। इपत्र (मत्म छेश छि कर्तन।

-- बना (मर्भंत ब्रांकांत क्या वार दांक প्रिकांद्र य व्यक्त महिलामिटगांत कर्गदिश डेशलटक डाद्रि धूमधाम इहेश शिशाट्य। धारे अब कटर्म ब्राजा 80 मिन ब्राज विधात्रां नशु मग्रम व वक्ष कर्त्रव। व्यत्मक श्वानि कार्राभार्य-वामीमिशक्छ काद्राशांत्र इहेट मुक्क कर्त्रम।

— मुत्रमिनावादम्ब नवादबब दिना शिविद्यादिव निमिन् - ता गर्थ पिय कि सिण म नियुक्त कर तन जा शादित का शा मज़ मगा छ इहेर । कार्या मगा छ इहेल वरकार्ष मारइव मिविल मत्रविम পরিভাগ করিবেন। অনেকের বিশাস (य. এই कमिणन नियुक्त करिया। भन्निपणे नवारवद এवः उँ। होत श्विम्तात्र शिक्त जात्मक जित्रित क्रियाद्व । ट्य मयुमग्र मन्नि बताव डाइात श्रेविमिश्तक मान कर्त्रन अबर डाँशांत्र श्राबत्रा जाना श्राम या ममूमत्र मन्शित প্राक्ष श्राक्ष इतेल । देशांत्र प्रदेश करनाराध्यम मग्रियाशांत्र इन, विविधियके धारे किमियन नियुक्त कित्रिया (म अयुम्य मन्भिः वाद अयाखं कित्रियाद्वा । অत्वद्कत विश्वाम नवादित य अनि हिल जोका जिनि श्वर्गापणेत विना केति:ज भाविल न!, किछ এই वाका जाका मिर्शित कर्न माश्राया পরিশােধ করিতে পারিতেন। আবার এই রূপ। গোচর ছইল' চলে যা নৈলে গুলি করিব। 'ইছাতে राम्छे (य. विदिवत एकार्छ श्रुक डीकांत्र शिखांत्र ममूनग मिना श्रीब्रिकाट्यब खांब निष्य धर्ग कबिएक हान, किन्द श्विन्द्रमण्डे डाँश्व बहे श्रष्ठादि मञ्च इन ना। नना-किंद्र (मगा शिद्रिणाध डेशनक क.ब्रा डाँश्व गन्शित ग्रेबर्टमणे सङ्ग व्यासमित कत्रितनम मा, बनादवत नश्र्म भशामात्र जाशालाश कित्रत्लान। श्वर्ग्यापित्र नियुक क्थिनां दर्शन एय अग्रम्त्र विष्ठांत्र क्रियां इच्च छां हो अवि-

ठांत्र कि ज्यक्ति। इहेशाट्ड डाहा जागामत जवशंड इरेगात्र (कान डेशांग्र नारे। हेराव दिल्याहें व्यक्तान रुग् नाइ, किन्छ यांम कान काम जाविष्ठा इहेश। थाक उत्व यादादङङादाअ প্রতিবিধান হয় ভাহা করা অভিক-र्ख्या। शाकालां व्रश्नियां मूमनामान এ ऐ छ स जा जि मूर्याम-मावादमञ्जनवावदक यः थाहिङ সন্মান कर्त्रन। डाँशत्र शङ्ब विश्व इय अत्मदक इश्विष्ठ इश्विम। आवार्य भविष्य विद अञ्चल, छेम।मा कि व्यक्तियां प्रविद्य याम छ।इत श्वन इत्र णिहा इहेटल मकरलंद आदिन अधिक प्रःथ इहेटव । जिनि वश्त व्यक्तम इहेश्रा शिष्शार्ष्ठम। वथन डाँहारक वामनी-श्रमि श्रात्र, वित्यव : श्रमल्या न मित्रां माश्राया ना कित्रित ত। इ। दिन व जाति कलक इहेत्। य नि श्वर्गायणे जा निः ज পান (य, क्रिंग अंत्रगंध नवार्यत প্রতি কোনরপ অভিচার कित्रिशां हिन जाका कहेला निक्त्य काकात कि जिन्न श्रदेश। शवर्षिय मूर्वाममावादम्य नवाद्व निक्छे अव-जत क्रज्या शाला जावक जाएइ। । हेन्छ। भूक्षक इं इन्त जिन्छ के ज़िल य जांकारमंत्र मक्ष शाश क्रेट्र जांका है!-इर्ज क्रांक्टिक व्यामार्मित्र भिक्रा मिटक इडेटन ना। व्यामा-मित्र विदिर्हनां स्व यां शांद अहे क्यमनात्र ग्रेप्त विहात कार्या छिलि ७ (कन किम्बन वियुक्त इइन इइ। शूखकाकादत धकानिङ इंग्न, डांश इहेल हेशत माय छन मक ल या यु छ। क बि ए ज नि विद्य अवर य मि कि मिन मब-श्व क्यान वियए । व्यान व्यान कित्र श्वा था किन श्वर्य विषय निम्हत्र छेर्। त्र मश्राभाव क त्रास्त्र।

— ভারত মহিলাদিগের প্রতি বোধ হয় ভাগা। ञ्चानत्र इहेल्लन । जात्काद्रिय द्राणी मन्द्र गाञादिन अक शानि मन्नाम भट्न गहे तथ निश्व इहेश दृष्ट । द्रांशी हेश्याकी जाया विलयन निया —मास्माख जात्मक कुर्डिक्व जामका कवि उहिल्ला। किर्याह्म, शियातम वाकावेट क्याहम जवर सम्मित्राव मिथान व वरमत जांक जांका भित्रभात कि इहेशाद्य, जामामा भूरश्वाकि किया कित्रियाद्य । जीमियात

ভূত ! ভূত ! !

इ उंक छे पश्चित करिए । प्राप्त । उथन ना इछेक, धार्म (किन विनिष्ठ श्राप्त किना छ। मा माना माना माना विकास । माना ना गवर्गमणे वाश इस बुबिएड পाविसाइन (य, जनर्यक किया मश्चारात भाषत म्या किया किया कि धरे शम। र्थिती (मृथितार्क्न ? जामता धलाकार्यात्म डेकात कथा खिनिटर्डाष्ठ्र, जवर जृट्डब माज कथा कि इटिडिंग वरे जास ज ज़टजब विषय मशाशास्त्र त्या क्रिया (धार्य করিতেছি।

मश्राण्य जनाश्रादा प्रशेषि जुड जागित्राद्ध। डाराबा अगति श्रानं विश्व विश्व वार्य वाम करिएडएइ। जारात्रा अरे क्राप्ता थकानिक रहेता शक्तिए बारनक (त्रत्नत्र कर्मा) वेक निवम वाजि कात्न उद्मिश्व शून्त्र निक्छे मुज जार्श क्रिंब्र ज जेशर वर्ग क व्रिश खावन क व्रिल (यन श्रीलंब ভिতর इनेषि लांक कर्शाशकथन कहिए जः इ। इंड। व्यवन कित्रिया तिटन्छना क्विल (य. काम (नाक চুরি করিবার মান্সে অপুসিয়া ঐ স্থানে লুকায়িত इन्या बिन्याद्धः अने विद्वहन। कांत्रमा " (कन दकन " किशा ठीएकात कतार्ड रहात "वावा" अहे প্রভাতর लक्त्रा दबल कर्माठां बी जुजिन्दात वाम ऋटनव निकंछ जेल-श्रिक इरेश विद्याय जानूमक्षीनांख्य किंदूरे जावत्लाकन তাহারা সিদ্ধান্ত করিল যে ইহা মর্যা নংহ কিন্ত छ १-(प्रवर्ग। त्राम वाम क्रिया डाहाता (म छान इहेट्ड श्रम् करिन। करम २ ज्र जानियाह ज्र जानि-श्राट्य वाना। जनवर इअवाट जा यानित अकता विजीय याघ (यम। इहेब्रा माइ। हाइकाट्या स्ट्यांच्य इहेट्याद्यां णास भर्ष स कड भक्ति कड (शावेक कड धका। आहा कड लांक उथाय श्वन अवर उथा इन्ट आश्वम क्रिट उट्ट

था ३१ कड लाक मछात्रमाम इहेशा दुः ठ खरात मार्ड -काशाशकथन कविराक्ट जाशा वर्गनाकी ज। जनका इरेशा थे: त्क त्यं, कर्ज शदक्षत्रा श्रीन न शादम ना वमार् काल इदे जि शाद्वन नाई।

धारे शादन अक खान वाकाली विनि अ शादन व काल इहेट वाम कड़िट उट्डन, डाँहाटक जिल्लामा क्यांट जिन कि जिन (य. याश्वात जा जा महत ज्राज्या ति इस् वे श्रात्म वकि त्र ३९ श्रुक्तिनी हिन । तम रे श्रुक्तिनी हिन कर्यकि वानक अनमय इहेबा खान जात क बिया जिल टाइन्द्राई कु उ य नि श्राध इहेश अकृति श्रकान करे गट्य। किस जारा कि कर्य करेट भार्य, यथन कृजिनित्रोत्र किन्छामा कर्त्राटक क्रिकार किन्द्राटक (व जारात्रा नरको नगत कराउ जानियाः ह। जानक कुछ विमा वाकानि जिनि जावनाई कुमश्कात विजि के विहेदन তুত घत्रक जिल्लामा करियाहित्नन (य धन्नकारीय नाम कि? अञ्चाबाब जाहाबा कहिला छाहाब नांग नागिगां छ इन किन्छ जा होत नाम जाइना अजान माणान इवगाटक, जिनि कहिः लन जामा मः ग वाका मिथा। इहेन, उहिरा जाहादा कहिन ल (ङ! मात वाका गिथा। आ: मामि: शत इतिमाम **ड** यदश्य ज्ञिनःशंत्र वाम श्रान्ती ित्वतः भ भाषा कंदिया (मिथ्या व्यामिया कहिल देश ममछ । किन्छ श्रेत्र मिनम छ निनाम (य, जाशात्रा (य मिनम (मार्था) वार्मिशाष्ट्रम, मिर्देशाष्ट्रम जेशास्त्र वार्मा वांजारेया न जा भी उ इहेसा शिया एए।

अक मिनम कार्या वणकः जामि महद्व याहिएक व्याभात भक्ते कृष्ठत नाम स्राटनत निक्छे भिक्षा विख्य लाक मर्जन कविया जामि डेडोर्न इस्ता धार्य क्तिनाथ धारे सार्वार जुड जानिवार्ड। निक्रेड इहेश (म थनाम जनारावादम्य दिन किन्द्र निम रहेत्रा (य त्रर्थ मश्क्रमां जार्ड जार्ड जार्ड जार्ड जार्ड जार्ड मिरशंत्र राम छ। न इहेश। इ। मश्क्रमि ज्यान जक्ष किंछ, जोशंत्र नाजाखात अक किंछ जल जां ह, वे किन धकिन निकर्ण्य श्रुक्तिनी हहेए जामिएउए । अभाग मखाश्रमान रहेशा अक्षि वा प्रहेषि नाया व्यवनाख्य (सहेत्। छि । इति । दिन श्रमाम (य, मनूषा जशास याइदल । व । व भारत। किन्छ य नि अ अहि यद्यात कार्या इत छ। इहेरल (म मनूषां । जाला कमजावान मनूषा न(इ, (य क्षित्र लाकत्क मधाश्रमान द्राधिशाद्य। कि तः भ अरे जार ভুতের ব্যাপার শেষ হয় পরে লিখিব।

कार्नन शंक ३५-इ (क अव्याति)

धकास वभाषन। अपृत्र अप्र भिज

वण्डा

कत्यक मिन इहेन, शास्त्रमारी विखादगंत्र सियुक किषमनब अठ् कक्:ब्रल मट्डाम् । वरे वशकाद जाम । र्या क्रिया काटलक् हे भी, आव्यायी, अ द्वाङ मम आभीत मर्गन कित्रता मिल्डाय लांड कांत्रता शिवार्डन। व्यामित मकः लग्न या एक व उपि थेश। न्या ने कि व विश्वाद (य । जा मात्र शिकारण जा कान जिल्ली कर है जा न स्वत्मावस (मिश नाई। वर्जमान माजिए हे जे मुक मश-वथ यटगमः यहे त्य अज्य धन्य बात्मव भाव जात (कान मत्मार नार्। आभाम अन्त्र अत्न या विक् बीयू 5 माजिए दे हे मा शाम अब ठ ज्वजा, दकी ने न यह (य जा: नकते। कं। कं। कं। किशा निवासिक्न, जाइ। इश ज (कर्ड् असीका ब्रक्टिक ना दिन ना।

विशानकात त्थां के बाक्कात बाहु क्रमत त्यां इस देख कृति जानभूरतन मार्गरमा (जा, दक्ष प्रतक मार्ट्स विशारिक्तार्थ मरम्भा इस्मा हिस्सन। वास्तार्भ विषय थे?, अভियोग मध्यान मा इंडाय कार्य व्यक्त मिन इंस विह्न थि हे न थि है विद्याद्य । व जना था। काव कि इंडेट्डाशीव कि एमनीय शक लाई यात शव ना स्रो इंग्रह्म । म्क्ट मान्सी किलि किलि

शांहिन। जिनिहात इस। वाखितिक, इनस वाबु द्वातांस (इन ? (य करसक घणे। जनर्थक करते खोकांत्र कितिसा ध्यानकांत्र (পारिक्षेत्र विভाগात यङ छेन्निङ इडेग्नार्ड, कान्य नित्रीड विड्डवर्गात निर्माय भौगिष पर्णन खवर भक्ष्यालय श्वाप्तर खांक (भाषों भिन, लियांत वक्ष कितिलन, मिहे करत्रक श्वीत धकरे युक् कित्रा मार्टिव স্থাপিত হইরা সাধারণের যেরপ সুবিধা হইয়াছে, বাহাত্র, বিচারপতিদের অন্যায় বিষয় গুলি তদন্ত धक्रिश क्षिन मिन छिल ना धवर श्रुक्षिक इड्रिव बिलियां अ करियां कि किछू क्रिक इड्रेक ? मार्ट्व वार्श्व इड्रेकी जात्र जामा कत्रा यात्र मा। जिमिनात्रि जाक शूर्वि शृथक जिन्ति माज, जिन्न जिन जिन मावक अ कर्यक्रो ভাবে কার্যা করিত এবং তরিমিত্ত যে কিরপ অস্থবিঘা পাখী শিকার করিয়াছিলেন। ও ক্তি স্থ করিতে হইত, তাহা বলা বাল্লা। ছদর ইদিলপুর আামে হারাধন মণ্ডলের বাটীতে স্থানে এবং পা এক স্থানে পড়িয়াছিল। এম্হা ঝাড় वावूत याज जाशा अक्न (भागे।भी मित्र महिज मिनिज रहेशर्ड।

ना छेटकत व्यक्तिय इड्या शियाट्ड। त्निश्यात निद्या-जारश ब्रम्मध्य " बीगुक नातू माधन ठम्म रेमरबय इन। यश्राभारत्रत यञ्चाधारत्र প্রতিষ্ঠিত বহুড়া থিয়েটর'' বলিয়া किंकि एन अशा हिल। ध्यानकात्र माजिए द्वेषे, ডिडिकिषे जल गंज कर्शक वाक्तिक मत्रामित विष्ठारत अभाम कित्रिश ज्यभातिए हे एक जा का जा का विषय अवश्वास्त्रम् विषय अ मिम मन (त्रा এই करा जन इंखेर्त्राभी य ७ (मनी स व्यानक मडा ख लाक छे शा इंड हिलन। कि हिकि ए पड़ा इहें। हिल। किन्छ श्रांतित्र जण्ये । প্রযুক্ত সকল লোক ধরে। খালাস পাইরাছে। তাহাতে সুযোগা জজ বলেম नारे। मास्य ज्ञानन ध्यक्ति करत्रकि कार्य। माखिएड्रेटे "निन्छत्ररे खर्यके माखिरस्ट्रेटे विठादित विषय किंद्र छ পूलिक मार्च विर्णिय मार्चिया कित्रिया हिल्लिन विलिया। विकि हिल्लिन। मावधान, अक्रि भूनक (यन ना इया" ভাঁহারা ধতা বাদের পাত্র। অভিনয় সম্বন্ধে সাধারণতঃ এই वला या देख शादि (य, जिंडिविज) शावित यथन এই ध्यथ्य जाजिनम् ज्यम रेश्यम वना याहे एक शाद्र ना। विटल्थिकः मसून्।, स्याजा, दर्गला।, भागत्राय ७ शूद्रा-हिड, हार्भा श्रेष्ठिक कर्यकि व्यक्तिया, मकत्नवरे स्मय जाकर्षण कित्रश हिल। তবে यে २। १ छि मामाग्र२ मार्थ लिक्ड इहेल, खत्रमा कित्र, विजीत वात्र जारात्र मश्टलाधन रहेरन।

मिन मिनरे मिछा न्छन मां जात्नत्र मध्या। त्रिक्त। विलिए निशान किमिनत्र निर्माहन कित्रवात मण्यूर्ग छात्र जारह। कि, प्रत्रो (मरीत व्यूधी एक वांशामित (मणेषें এकवांद्र वांकवां विवाद विवाद वांशामित वांशामित वेंग्ला के वेंग्ला के त्रमाज्यलाई शाला। शावर्यक्षे लाख्ड प्राथियन, ना এक गिमनत निर्माक्षित कतिएक भारतन। किन्छ अहे शुक्रकती वात्र हिर्द्वःथी निःमञ्चल थाका त्रामात्र थां ज्ञ मकर्ष मृश्चि भार कित्रिवन? कलकः भूत्रा (मरीत खद्रक (खांख দিন २ यंत्रशं विक्रिं छ इहेट छ । ত। তে এ সময় অগ-जित्र शिंख श्वर्गायण्डेत इस्टाक्ल जिल्ल जांत्र निवातरात्र (या नाई। इंखाज डेश्रमं (मंड, महद्य प्रजा निवादिगी (वा वार्षिनी?) मछा हे करव, कि हुए उरे कि ह रहेवांत्र नत्र।

এবার আবার হোর অনার্ফি। প্রায় ৬। ৭ মাস **इहम, इश्वित नाम शक्क नाई, जाकान शित्रकात।** मज्-क्तित्र धुलाग्न छला यात्र ना। याष्टि लाशदत्रत्र यङ एक अ नित्रम। मिडेनिमिश्रीनिটि इइटिड यमिड मफ्रकत धुन्। नि-वाज्ञणार्थ जल हिंद्रोदनज निज्ञ जाट्ह, किन्छ जार्थ विटमंब २ लट्य. माधान्नत्वत्र ङात्या घटि ना। जान य क्य जन ल्यंक नियुक्त जाटह जाशामित्र हारा मयुन्य व्यक्षितीय प्रांखाय जल हिंदोन मञ्जावनीय नर्। व खना जांत्र जांधक लांक नियुक्त कत्रा जांवनाक। व्यमार्थाय (लांदक्त उप्रथ नाहे। व्यायता विनी जांदव मिडिनिमिशान कि मिडिटक श्रार्थना कित्र, याशाट मकल मज्क अलिएडरे जल हिंछोन एम जार्म किन्न (नाटक्त्र क्छ मृत ककन।।

३৮१५ मोन २८७ (कबमानी।

(कान इः भी। रश्रुषा।

उक् यान-तात्रना।

भ मिन कलिकां छ। हाहरकारहें के किथ विशेष ब्रोग्रम। थानां व जाल र्शक ब्राहेश्व मायक क्रमनेमग्र आविटिक भिकांत्र कींद्राङ जानित्रा हिटलन। मटल रक्तियानत खाल, माजिएको है, श्रीलिश माट्ड्य, ध्वर जानगाना मिविलि-= अभिशां हित्नम। आंगातम् वर्षामान्य बाजाविवाक वाहोइब, अमार इंच वाहोइर बन्ना अजार्थनार्थ ज्यात शमन किंद्रियां किटलमा किछ जामादम्ब अक निद्यम्म अहे द्य,

मम्भु जि এक ভয়ানক ডাকাইতি হইয়া গিয়াছে। নগদ होकाश्रु त्नार्हे उ जनकार्याम्टि धारा १२। १८ मध्य व्यमा 8 मिन इन्नेल, बश्रुषा थिः गुष्टेत्व व्रामान्टिष्यक होका व्यथन इन्नाहि। मञ्चारान व्रान्ति ১० होत ममग्र

> ७। वर्षभारमञ्जादाने माजिए द्वेरे, बाग्रमा थानाज कांत्रावाम, এवर ১० होका कित्रिया अर्थ मछ कर्त्रम। वादध करत्रक वाङ्कि धरे क्रिश बीयत मर्गन क्रिन यद्ध। किन्छ स्रः अत्र विषय, नित्नायोगण जाभीतन मश्रामात्र वाकाली विष्युत्रशिक इहेल कि इहेक? (मथून, এতদঞ্চলে मद्रामदी विচার কিরাণ! তবে নাকি লেঃ शंवर्षत्र विलिशां दिन, " बन्न दिन मत्रामित्र विष्ठां त्र छेलम इहेट ज्हा"!

8। यशभाग्र, कनिकाठा मिछेनी भिनोती लहेग्रा व्याखिक कालि माननीत्र मशाम शख मन्भामक मशाभागा। ल्यभो धात्रण क्तिष्ठिक् ; किन्छ मकः श्वरल कि इहेट एह जोर्गत मश्योम (क नग्न विश्व इस जात्मकरे वश्रणं एक व्यांक कोल मार्की लाव वर्ष हे हर्ष हर्षि !! क्रांतिन, वर्षमात्वव कव्यांक्र विश्व विदेशिन-थ्यगानी मत्नु अथात्न धात्र शक्षां हे इत्हर् मिन धक जन मार्च्य धक कृषीर्ड वामा कर्त्रम धवश जोकांत्र कत (होका) मथून क्रेल। जात जक जन मार्ह् वक्षी ऋत्न वामा नइशाद्छ, यादावन ১०० भंड देका देका, जाशा अश्व इहेल। जाशा ध शिल एक वाकाली थाकित बीजिया है। का नाउबा इहेड

উषा, ज। ভীষণ বাত,1।

विशंख नत्वम् मातम, (वामाई छे शंक्रल (य महाबाड छेशिञ्ड इइंग्राहिल, তाহा এখন পर्गास आगासि लाड करत नाई। बाग्र जखिव পणिएजता भागना कित्रा ना इग्र। तिथिशां दिन, मार्फ मारम छेश लिय इहेरव। कना। जा अ-त्रीश इइटिं श्यालग्न शर्याख श्राम, नश्व, तन, छेश्वन, त्रांक धेमाम, त्रांकामान जर मन्त्रा, शख, शकी, প্রভৃতি সকলেই উহার প্রবল পরাক্রমের পরিচয় পाইয়াছে। উহার বেগে ছাতী মরিয়াছে—বরাহ কুদ্র-কায় পশু তাহার কথা আর কি বলিব—" অরণো जायको धूर्डछ" बका भाग्न मारे। छेरांत एकादा जांदा জुलिशांट्ड। " वांग्नश विक्ति। शिष्टः" के बाजा। श्रेक्गूट्थ, जान शत्र मिन्न প্রথমতঃ তার পর উত্তর মুখে, ভীষণ বেগো প্রবাহিত (वाथ इज्ञ की गूरथई छेहा भाष इड़ेरव; किन्छ किह किह अञ्योन करतन य श्रनतात्र छेरा श्रक्तां छिम्भी रहेरड भारत। यां श इंडेक जांत्र ज अकांत्र जीवन बाज जांत्र मृखिटगांत इत नाई।

क्षे वां जां स मानूय करा जन किलादि मित्र सिंह, जांका এখন পर्यास निनी क इस नाई अवर जाभत कि कि इस हिना मश्चिष्ठि इहेशांट्र, जांकां अभाक् खांठ इहेट भावि नाई; उदव जागता अहे मांज अनियाहि, कटात गरा- जिल्ला नाथ तात वाता अकानिड र्य

त्रांका बहे बार्ड व्यांने जारा कित्रिशं हिन जैवर निकारमत त्राका প্রায় বিপর্যান্ত, কাহারও কণ্ঠান্থি কাহারো नामिकाण्डि उद्य इहेशाएछ। ऋ (थंत्र विषय हेहात्रा न्मदत्रन नारे। किन्छ प्रः एथत विषय (य शिक्ष्य अतिर्भिक्ष अतिर्भिक्षित প্রায় १०। ৮০ জন লোক এক কালে প্রাণ ত্যাগ করি-याद्य। जारा निगदक याद्य छेड़ा देश थाय जिन मारे इ. इ. निक्लि कि त्रिशिक्ति जवर छोडारकत रांड ज् वरे এक व्याशांत्र मश्यिं रहेशां ए, य जारा खिनाल मकल (करे आश्वर्गातिक रहे एक रहा। मकल (लरे पिश्र (इन, প্রবল বাতা। नদী তীরে বালুকা রাশি ইতন্তভঃ वित्किशं करत्र, कटल निर्क्शं करत्र, किन्छ असए द्रिशी वाणि छेड़ाइयारछ। छेडात ममस्क वालुकारत्रन, जनश ञ्चर्गद्वर्ग छेङ्य हे ममान। जाशनात्रा (नाथ्या ह्वन, बार्ड উচ্চগিরির রক্ষ ভূমিতে অবলু: গ্রভ হয় কিন্তু এ ঝড়ে ভার-তের রাজ মুকুট ভূমি স্পর্শ করিয়া লুটাইয়াছে, সুথে विषय छे९ था ि उ इय नाई।

वाभवा खनियाहि, शंक १५ मत्नव व्यापितव बाद्वव পর, नमो खशाइटल অনেকে ভাছার ভিতর টাকা কড়ি পारेया ज्यो इरेगार्छ। अ वार्ड कि जारा रय नारे? इड्शिष्ट् वहे कि। भाष्ठक यहाण एश्रत्रा छ नित्रा जन्मा हे जे क्रिथ भनी शहेर उहेर इहर वन जाशांक जात मश्नां कि? त्रांज श्व इइटिंड को दोलित श्व श्रांख पन विद्याशिय इरे भाष छन किছूर धन भारे मार्डन। उद्व त्रांक शृद्धत थन शाहरक धन क्य इहेग्रांद्र, काढीत्नत পুত্তের কেবল বাকা ৰায় মাতা। রাজ্যুত্ত প্রকৃতই রাজ श्रुल, वानदब्र विवाद लक मूख। वाय कवियाद्व । काछात्नत्र श्व धूर्ज—वत्न हत्न काधा मिनि कत्रि-श्रांट्य।

मन्भामक पश्चाम्य, व्याभिन जिल्लामा कदिए शीदान य प बाज़ मानूय महिल, राजी महिल मकन काखरे रहेल, त्नोका पूर्विन करे? ज्या जानारेल करे? व्यामि विन जोत्राज जदा कहे (य जनादि, त्नीका कहे (य निमर्डिक इहेर्व। जाधु जनाहे जाधु दा काल नाहै। তবে তুবিবার মধ্যে তুবিল ভারতের ধন রাশি। वकारफ (मनकूनहुष প্রভুত প্রাক্রমশালী প্রন দেবের চরণ नथ(त र्थश्या शर्म निएक्ष कित्रिया, जात्र जातात তला मार्गदत्र पुविल; जामत्रां जिव जिविषा । खंड गंगना क त्रा का ख रहे।

''ঝড় বয় ভার বড় ''যতকাণ ঝড় ততকাণ ভায়, তাছার পর আকাশ নির্দাল হয়, বায় পরিফার হয়, অস্বাস্থাকর मिन स्था सां करत वह विधा जात्र मित्रम। जामत्र। তাই ভাবিয়া আশা করি ৰাতা। অবসানে ভারতের স্থ वां ज़िर्व इःथ चू हिर्त, निष्ठा जां जिर्त, जिर्ज कांनि ভারতের ভালা কপাল, কপাল গ্রণে শাম ভামাল

टि जांबज वामि, जांबां वर् जार्थ नांबा इहेल वर्छ, श्वित्ल, कि मा तूबिल, मर्खा এ इर्ग-जीकि शूर्व वाजा-निर्धाय श्रामियात्र, जाम्छे भूकि जुम्न काश मिथाता जा अर्ग इहेट अर्गनामीया जाकाह्या हिन ; जामाय कथा व्यात्र कि ? अरे व्यवमदत्र दश्महत्स्त्र तीना द्वान, नवी-टनन नश्मी श्राम, नाम्नदनन सक्षात, मश्नाम भटबन छङ्कान कड़ ना श्वानित्न; जात्र क्रम्त्य केष्ठ् । म न्या के देशनिक করিলে ভারত শরীর কতটুকু শোণিত প্রবাহিত্ত হয় তাহাও দেখিলে, কি ছিল, কি হইয়াছে তাহাও নিজনি अधितल ; उत्य ध वाजात्र क्या इहें जा। विशासात थ अवाम (म अ, (य यथन প্রাণ তাস্ত হয়, মন নিডেজ হয় जथन त्यन अहे जाश भशाबाज डेशिश्ड इहें स्टिंड यन कांगितिक कर्त्र, मृड शार्त रिक्ना मकांत्र कर्त्र।

बी जीः-

বশস্ত্ৰ

এই পাত্ৰকা কলিকাতা, বাগাবাজার আনন্দ চন্দ্ৰ ठा ऐट्यांत्र शानि २ नः वाली इइटि थाडि त्राधिवाद व